सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 • अंक 12 • 5 मार्च 2020 • मूल्य : 20 रु.

अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति
पूज्यपाद आचार्य भगवन्त
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज
के 60वें जन्म दिवस (दि. 8 मार्च 2020)
पर वंदनाऐं...शतशः शुभकामनाएँ...

बालोतरा में पायल बागरेचा की दीक्षा संपन्न

नया नाम साध्वी पर्वप्रभाश्रीजी घोषित

नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण न गिण्हाई तवेण परिसूज्जई॥

मनुष्य ज्ञान से पदार्थों को जानता है, दर्शन से श्रद्धा करता है, चारित्र से निग्रह करता है और तप से परिशुद्ध होता है।

One knows the nature of substances through knowledge, keeps faith in them by right Darshan, develops salf-control by right Conduct and purifies the soul by Penance.

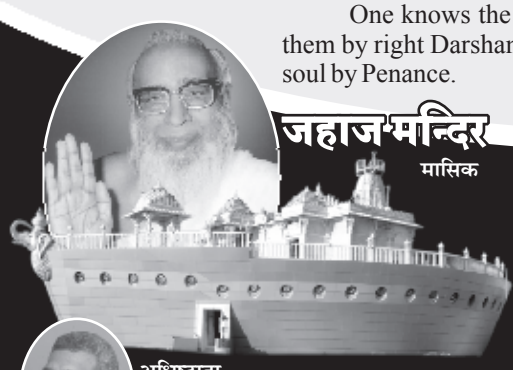

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 अंक : 12 5 मार्च 2020 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	गुडूर	05
3. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	06
4. गौत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
5. अधूरा सपना	डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	09
6. मोबाईल फोन का नशा		11
7. अवसर की पहचान		11
8. व्यर्थ के सपने		12
9. समाचार दर्शन	संकलित	13
10. चातुर्मास उद्घोषणा उत्सव		20
10. सस्था संरक्षक		37
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	38

विशेष दिवस

1 मार्च चौमासी अठाई प्रारंभ
3 मार्च रोहिणी
7 मार्च श्री सिद्धाचल जी की फाल्गुन फेरी
8 मार्च चौमासी प्रतिक्रमण, पूज्य अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. का जन्म दिवस
16 मार्च वर्षीतप प्रारंभ, श्री आदिनाथ जन्म एवं दीक्षा कल्याणक,
20 मार्च चतुर्थ दादा श्री जिनचंद्रसूरि जन्मतिथि, खेतासर
23 मार्च पाक्षिक प्रतिक्रमण
25 मार्च नूतन वर्ष विक्रम संवत् 2077 प्रारंभ
30 मार्च रोहिणी
31 मार्च नवपद ओली प्रारंभ
6 अप्रेल श्री महावीर जन्म कल्याणक, महो. समयसुन्दर जी पुण्यतिथि, अहमदाबाद
7 अप्रेल पाक्षिक प्रतिक्रमण
8 अप्रेल नवपद ओली समाप्त, सिद्धाचलजी यात्रा

नवप्रभात

परमात्मा महावीर मेरी आंखों के सामने थे!

उनके दीप्तिमान मुख-मण्डल से करुणा छलक रही थी।

मैं तन्मय होकर कृपा-रस-पान कर रहा था।

परमात्मा में डूबा मन चिंतन की चांदनी से भीग रहा था।

विचार परमात्मा के इर्द-गिर्द घूम रहे थे।

परमात्मा के असीम उपकारों के स्मरण से मन गद्‌गद् हो उठा था।

तभी जिज्ञासु मन ने कृतज्ञ मन से प्रश्न किया-

कृतज्ञ मन ने उत्तर दिया- परमात्मा का सबसे बड़ा उपकार 'स्वरूप-दर्शन' है!

जिज्ञासु मन ने इसकी व्याख्या विस्तार से जाननी चाही।

कृतज्ञ मन भाव-विभोर होकर उत्तर में एक रूपक सुनाने लगा-

एक व्यक्ति अंधेरे में जा रहा है। अमावस्या का घना अंधेरा है। सड़क पर जा रहा है। उसके पास प्रकाश का कोई साधन नहीं है।

अचानक पीछे से किसी ने टॉर्च का प्रकाश सड़क पर फैंका!

उस व्यक्ति की नजर रास्ते पर पड़ी। वह तीव्र कदमों से आगे बढ़ रहा था। अचानक ठिठक कर रुका। हाथ-पांव कांप उठे! और तत्काल पीछे की ओर लौटने लगा। जिसने प्रकाश डाला था सड़क पर, उसके प्रति वंदना के भावों से भर उठा।

क्योंकि वह जहाँ चल रहा था, उसके तीन फीट की दूरी पर ही एक खतरनाक कोबरा सांप बैठा फुत्कार कर रहा था। वह सहम उठा। भावुक होकर प्रकाश जहाँ से आया था, वहाँ देखने लगा। इस प्रकाश के कारण मैं बच गया। इस प्रकाश का उपकार कभी भुला नहीं सकता।

कृतज्ञ मन ने कहा- प्रकाश ने कुछ नहीं किया... मात्र रास्ता दिखाया। ऐसे ही परमात्मा करते कुछ नहीं, दर्शन कराते हैं। मन सम्हल जाता है।

मेरा जिज्ञासु मन कृतज्ञता से भर गया।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 6

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर, गुन्टूर

-मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
- साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

छह लाख की आबादी वाले गुन्टूर नगर के जैन टेम्पल स्ट्रीट में श्री गौड़ी पार्श्वनाथ परमात्मा का मंदिर अवस्थित है। पार्श्व प्रभु के अलावा श्री आदिनाथ भगवान एवं श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। उपरोक्त तीनों ही प्रतिमाएँ धातु से निर्मित हैं। इन प्रतिमाओं की अंजनशलाका प्रतिष्ठा हुए एक शताब्दी से अधिक का समय व्यतीत हो चुका है।

मुकादम शा. चन्दाजी खूबाजी कम्पनी के प्रयासों से जहाज मंदिर प्रतिष्ठा के समय तीन प्रतिमा जी की अंजनशलाका करवाई गई थी, जिनकी प्रतिष्ठा पिछले दिनों संपन्न हुई हैं।

मूल गंभारे में प्रभु प्रतिमाओं के आगे मूलनायक प्रभु के बायें एक अच्छे सुन्दर धातु के सिंहासन पर दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. की चंदन प्रतिमा लगभग 2.5।। लम्बी तथा 1.5।। चौड़ी चल प्रतिष्ठित है। यह प्रतिमा 50 वर्ष प्राचीन है। दादा गुरुदेव की प्रतिमा बहुत छोटी, पर मनमोहक है।

मंदिर में मणिभद्रजी एवं पद्मावती माता जी की प्रतिमाएँ भी स्थित हैं। नगर में 400 जैन परिवार हैं, जिसमें से 375 मंदिरमार्गी हैं, 23 स्थानकवासी एवं 2 तेरापंथी हैं।

ह्रींकार तीर्थ यहाँ से 13 कि.मी. की दूरी पर है।

पता : श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर,

जैन टेम्पल स्ट्रीट,

गुन्टूर - 522 003 (आ.प्र.) दूरभाष : 0863-2221891

खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य भगवन्त

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा

के अवतरण दिवस (61 वें वर्ष में प्रवेश) पर

वंदनाएँ... ढेर सारी शुभकामनाएँ...

शा. भवरलालजी संकलेचा परिवार

विनीत

ललितकुमार, राजकुमार, गौतमचन्द, पादरु-चेन्नई-हैदराबाद

सोलह सतियाँ
कथानक
15

विलक्षण वैराग्यवती महासती कौशल्या

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

अयोध्या का आनंद आज सारी सीमाओं को लांघकर अनहद हुआ जा रहा है। आज का सूर्योदय जैसे सौभाग्य और पुण्योदय की लालिमा लेकर अवतरित हुआ है।

गली-गली में....घर-घर में हर दहलीज पर प्रेम और बधाई की मिठाई बँट रही है। क्या बाल, क्या युवा, क्या प्रौढ़ और वृद्ध, कोई भी आज फूला नहीं समा रहा है।

लोगों का मेला-रेला एक दिशा में बढ़ता जा रहा है और यह है महाप्रतापी सम्राट् दशरथ का भव्य उत्तुंग व रमणीय राजभवन, जिसकी छटा तो आज देखते ही बनती है। फूलों से सजा महल जैसे उपवन की भाँति खुश्बू से खिल उठा है। चारों ओर खुशी के दीप जलाए जा रहे हैं। विशाल पाण्डाल में हजारों लोग दिन के पहले प्रहर में ही आकर उपस्थित हो चुके हैं।

राजा से प्रजा, रानी से दासी, हर होंठ पर मुस्कान के मुकुल सज गये हैं। सर्वाधिक प्रसन्न और भाव विभोर है अयोध्या की महारानी कौशल्या !

उसकी चिरसंचित भावना आज साकार हो रही है। कब से वह देख रही है युवराज राम के राज्याभिषेक के सपने। उसके रोम-रोम में राम का समर्पण, विनय और कृतज्ञ भाव उभर आया है। उसके कक्ष में आज चहल-पहल भी अतिविशेष है। वस्त्र और दिव्य आभूषणों से सज-संवर रही कौशल्या साक्षात् लक्ष्मी प्रतीत हो रही है।

अचानक उसे याद हो आया है अपराजिता से कौशल्या तक पहुँचने का गरिमामय इतिहास! बहुत कम लोगों को पता है उनकी जीवन-कहानी।

स्मृतियों के रथ पर आरूढ़ होकर कौशल्या प्रत्यावर्तित हो चली है और एक-एक करके जैसे सारी घटनाएँ उसके सामने घटित होने लगी हैं।

कुशस्थलपुर छोटा पर संगठित और समर्पित प्रजाजनों का आश्रय स्थल है। नीतिनिपुण महाराज सुकौशल राजसिंहासन पर बैठे प्रजाजनों की पीड़ाएँ-बाधाएँ सुनकर करुणार्द्र हृदय से दूर करने का प्रयत्न कर रहे हैं। कुछ पलों में गुप्तचर का आना हुआ है। उसकी गंभीर मुखाकृति देख सम्राट् की व्यग्रता बढ़ गयी है। अगले कुछ ही क्षणों में सभा का विसर्जन कर वे निजी सूचना कक्ष में पहुँच गये हैं।

गुप्तचर पहले से ही वहाँ उपस्थित है। हाथ जोड़ कर उसने सन्मान और आदर भाव प्रस्तुत किया है।

क्या बात है? तुम गंभीर और भयभीत दिख रहे हो।

हाँ राजन्! अयोध्या के अधिपति दशरथ अपनी विशाल सेना के साथ हमारी सीमाओं की ओर बढ़ रहे हैं। उनकी प्रचण्ड प्रतिभा और विशाल सैन्य दल का सामना करने में बड़े बड़े महाराजा भी अक्षम हो उनके शरणागत हो गये हैं। एक ही सांस में गुप्तचर कह गया।

सुकौशल के माथे पर पसीने की बूंदें उभर आयी ! उन्होंने कहा-हमसे कितनी दूरी पर है वे?

ज्यादा दूर नहीं राजन् ! जिस तीव्र वेग से वे उफनती नदी की तरह कूच कर रहे हैं, उससे तो दो से तीन प्रहर में हमारी सीमाओं में प्रविष्ट होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

ओह ! इतने निकट ! तुम उनकी हर गतिविधि पर सूक्ष्म दृष्टि जमाएँ रखो, मैं मंत्रणा कक्ष में पहुँचता हूँ।

परस्पर मंत्रणा में मंत्री, सेनापति आदि का एक ही मत था कि शरण में चले जाये। सामने जायेंगे तो उस महागजराज के पाँवों तले कुचले जाएंगे। आत्मसमर्पण ही आत्म-सुरक्षा का सर्वोत्तम उपाय है पर महाराज सुकौशल को यह स्वीकार्य न था। वे युद्ध के समर्थक नहीं थे तो

प्रजा और राज-सीमाओं की सुरक्षा के लिये अपने कर्त्तव्य से पीछे हटना भी उचित नहीं समझते थे। सन्धि और समर्पण में घोर कायरता ही नहीं, क्षत्रियोचित गौरव का भी हनन था। अन्ततः उन्होंने क्षात्रधर्म का बिगुल फूंकते हुए अपने रथ-गज-अश्व दल के साथ समराँगण की ओर प्रस्थान कर दिया।

नभमण्डल तलवारों की चमक से चमक उठा। भूखे भेडिये की भाँति दोनों की सेनाएँ एक-दूसरे पर टूट पड़ी। यद्यपि दशरथ के विस्तृत सैन्य दल के सम्मुख सुकौशल की सेना अत्यल्प थी, फिर भी स्वदेश के संरक्षण और उसकी आन-बान-शान के लिये मर-मिटना उनकी महान् खूबी थी। अल्प सैन्य दल....स्वल्पकाल....। ऐसी स्थिति में महासुमेरु से टकराना आसान नहीं था। कुछ ही समय में सुकौशल की सेना के पाँव उखडने लगे। यह देख महाराज का शरीर और आत्मा काँप उठी। युद्ध का निर्णायक क्षण उपस्थित हो, उससे पहले ही मंत्री और सैन्याधिपति को गुप्त संदेश देकर राजमहल की ओर लौट चले।

इधर महारानी अमृतप्रभा और पुत्री अपराजिता, दोनों कुलदेवी के कक्ष में प्रार्थना कर रही थी-देवी ! आप ही हमारे कुल-बल-धन और सम्मान संरक्षिका है। जब-जब संकट के बादल छाए, हम बाल आपकी शरण-चरण में आकर निश्चिंत हो गये। अब आपके ही हाथों में महाराज सुकौशल के प्रशासन की कुशलता है। आप चाहे तो तारे....चाहे तो....।

महारानीजी ! महारानीजी !

'महारानी' शब्द सुनकर अमृतप्रभा जैसे बाहर के संसार में लौट आयी। दासी हाथ जोड़े कह रही थी-महाराज! युद्ध से लौट आए हैं। सुनकर जैसे अमृतप्रभा के अंग-अंग में आग लग गयी।

वह हतप्रभ हो मुख्यद्वार की ओर बढ़ती, उससे पहले ही महाराज सुकौशल महल में प्रविष्ट हो गये। अमृतप्रभा का रक्ताभ मुखमण्डल उसकी अरुचि और आक्रोश को स्पष्टतः अभिव्यक्ति दे रहा था।

राजन् ! आपका यों समरभूमि से प्रत्यावर्तित होना कुल और परम्परा के गौरव-कलश को धूलिसात करने जैसा नहीं? अमृतप्रभा जैसे गरज उठी।

महाराज सुकौशल ने अमृतप्रभा का हाथ पकड़ा और कहा-देवी ! तुम निजी कक्ष में चलो। सारी बात बताता हूँ। अमृतप्रभा महाराज के पीछे-पीछे चल पड़ी। आसन पर बैठते हुए सुकौशल ने कहा-देवी ! मेरा मुकुट... .मेरा राज्य छीना जा रहा है। ये परिवार...ये बाग-बगीचें...ये खाद्य भण्डार, सब कुछ लूट जाएगा देवी! मैं बहुत उदास और हताश हूँ। इस पराजय को कैसे झेल पाऊँगा!

पर महाराज! आप क्षत्रिय कुल में जन्मे, पले, बढे और युद्ध से भाग आए? मुझे तो आश्चर्य हो रहा है कि पीठ दिखाकर भाग आना, यों राजसम्पदा में आसक्ति जताना....क्या आपकी प्रतिष्ठा का अधःपतन नहीं है? सच्चा क्षत्रिय तो वह है, जो अपने प्राणों को प्रण की बलिवेदी पर न्यौंछावर कर देता है। खून के कतरे-कतरे को प्रतिष्ठा और राज्य के संरक्षण में बहा देता है पर संकल्प विमुख नहीं होता है। मैं तो आपसे एक ही प्रश्न पूछती हूँ कि गरिमा पर कालिख पोतकर प्राण बचा लेने पर भी क्या आप सुकून से जी पाएंगे? कहते-कहते अमृतप्रभा के चेहरे पर क्षत्रियाणी का तेज और ओज उभर आया।

धीरज से सहज होते हुए सम्राट् सुकौशल ने कहा-तुम जैसा समझ रही हो, वैसा कुछ भी नहीं है। यदि मुझे प्राणों का मोह होता तो संभावित परिणाम जानने पर भी रणमैदान में कदम क्यों रखता? क्यों न सभी की तरह आत्म-समर्पण की सोच स्वीकार कर लेता !

एक तरफ आपका नैतिक दायित्व के तौर पर युद्ध में जाना और बीच में से वापस आकर स्वयं को निर्दोष ठहराना, मुझसे तो यह पहेली नहीं सुलझ रही।

देवी! रणभूमि के अधबीच से लोटने से तेरी मानसिकता मेरे प्रति सन्देहास्पद बन गयी है पर सच्चाई तो यह है कि यह युद्ध हमारे लिये चुनौती नहीं, आनन्द का अवसर बनकर आया है।

(शेष अगले अंक में)

गोत्र का इतिहास
23

पोकरणा गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

यह घटना बारहवीं शताब्दी की है। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि अपने शिष्यों के साथ विहार करते हुए अजमेर पधारे। उन्होंने अपने शिष्यों को आसपास के क्षेत्रों में धर्मप्रचार हेतु विहरण करने का आदेश दिया। गुरुदेव के शिष्य मुनि देवगणि पुष्कर की ओर विहार में थे।

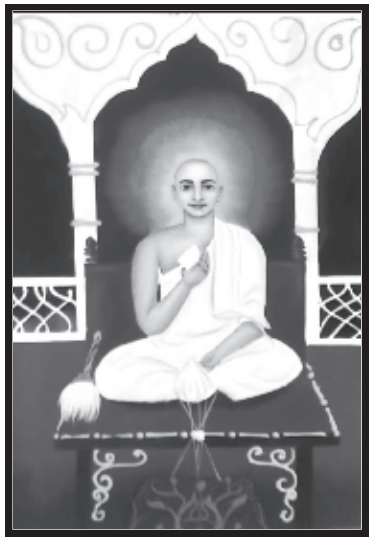

उस समय गांव हरसौर का रहने वाला राठोड सकतसिंह पुष्कर यात्रा करने के लिये आया। माहेश्वरी जाति की एक मां अपने चार पुत्रों के साथव हींय ात्राक रनेक`ि लयेअ ाई हुई थी।

संयोग से जब वह महिला पुष्कर के तालाब में स्नान कर रही थी, तब एक विशालकाय मगरमच्छ ने उस महिला को पकड लिया। वह चिल्लाने लगी।

उसी समय राठोड सकतसिंह भी स्नान के लक्ष्य से वहाँ आया हुआ था। वह उसी समय उस महिला को बचाने के लिये तालाब में कूद पडा। उसे भी मगरमच्छ ने पकड़ लिया।

उसी समय मुनि देवगणी का उधर आगमन हुआ। यह दृश्य देखा तो उसी समय उवसग्गहरं स्तोत्र का जाप किया। उवसग्गहरं स्तोत्र की विद्या का विशिष्ट जाप कर वहाँ खड़े दो-तीन लोगों को तालाब में जाकर उस महिला व राठोड के प्राण बचाने का आदेश दिया।

गुरुदेव की परम कृपा से उनके प्राण बच गये। वे सभी गुरुदेव के चरणों में वंदना करने लगे। उन्होंने गुरुदेव का उपकार माना। प्रार्थना की कि हम आपके श्रीचरणों में क्या अर्पण करें!

तब गुरुदेव ने धर्मोपदेश देकर कहा- हमारे गुरु महाराज महाप्रभावी आचार्य जिनदत्तसूरि अजमेर बिराजते हैं। उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करो।

सकतसिंह राठोड गुरुदेव के दर्शन करने के लिये गये। उनकी निर्मल वाणी श्रवण की। लगातार उनकी उपासना से उसने प्रभावित होकर श्रावकत्व स्वीकार किया। पुष्कर की इस घटना के कारण गुरुदेव ने उन्हें पुष्करणा गोत्र देकर ओसवाल जाति में सम्मिलित किया। कालान्तर में वे पोकरणा कहलाने लगे।

केयुप द्वारा सुमेरु नवकार तीर्थ में शिविर लगेगा

चोहटन 4 मार्च। पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में सुमेरु नवकार तीर्थ में अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् के तत्त्वावधान में वांचना शिविर का भव्य आयोजन किया गया है। यह शिविर बडौदा के समीप सुमेरु नवकार तीर्थ में आयोजित होगा। यह शिबिर दि. 22-23-24-25 मई 2020 को होगा।

इसमें 16 वर्ष की उम्र से अधिक के बालक, युवा, बालिकाऐं आदि सभी भाग ले सकेंगे। आवेदन पत्र प्राप्त कर भर कर भेजे। अनुमति मिलने पर पधारे।

सम्पर्क सूत्र - गौतम मालू-9825135775, महेन्द्र छाजेड़-9825111215

रमेश बोहरा-9824102061, अल्पेश झाबक-9825318303

धारावाहिक
कथा
13

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

युवरानी के साथ युवराज को गृहमंदिर में जब महाराज और महारानी ने देखा तो उनके आनंद का पार न रहा।

उन्हें लगा- जरूर पुत्रवधु के साथ-साथ हम सभी का भाग्योदय होने वाला है। लम्बे समय बाद आज कुमार गृहमंदिर में आया है। धीरे-धीरे उसमें परिवर्तन आ रहा है। सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आता है तो वह भूला नहीं कहलाता।

आरती आदि से निवृत्त होकर युवराज कुछ देर अपने माता-पिता के साथ बैठकर सामान्य शिष्टाचार की बातें करके युवरानी के साथ उपवन की ओर चल पडे।

युवराज का हाथ अपने हाथ में लेकर चलते समय युवरानी के कदम धरती पर नहीं टिक रहे थे। लम्बी तपस्या और इंतजार के बाद आज उसने अनूठा आनंद पाया था। उसे आज धरती पर देवलोक का सुख मिल गया था। वह प्रियतम के मीठे सान्निध्य की कल्पना में डूबती तैरती जब बाग में केले के पत्तों से बनायी कलात्मक कुटीर में पहुंची तो आँखें आनंद और अचरज से चौडी हो गयी।

कुटीर के बीच एक विशाल पर्यंक बिछा हुआ था। उस पर रंग बिरंगें अनेक प्रकार के सुगंधित फूल बिछे हुए थे। फूलों की सुगंध दूर-दूर तक फैलकर युवराज और युवरानी के प्रेममिलन का संदेश दे रही थी। कक्ष की साजसज्जा और फूलों की महक का नशा युवराज के मन पर चढ रहा था परंतु उसने दृढता के साथ बहकती भावनाओं पर नियंत्रण लगाया। नीरव रात्रि का सन्नाटा... महकते फूलों की खुश्बू... प्रकृति में बिखरा हुआ अनुपम सौन्दर्य और युवरानी का समर्पण और प्रेम से छलकता यौवन...। युवराज का मन कुछ देर के लिये खो गया।

उसने सोचा- क्या वह पागल है जो अनायास मिले इतने विराट खजाने को छोड़कर पराये खजाने में मुँह मारता भागता है? दूसरे ही पल अपने सिर को झटका देते हुए उसने कहा- कम्मु! लगता है आज तुमने मुझे घायल करने का पूरा मन बना लिया है। क्या अद्‌भुत स्वर्ग खड़ा किया है। यह सब तुम्हारे समर्पण और प्रेम का प्रतीक है।

युवरानी तो संकोच के मारे पलकें ही नहीं उठा पर रही थी। उसने युवराज के कदमों में झुकते हुए कहा- स्वामी! आपका सान्निध्य मेरा सौभाग्य है। मुझे आपका सामीप्य इसी तरह जीवन भर मिलता रहे, बस यही मेरी कामना है।

रात गहरी होती जा रही थी। पुष्पचूल ने देखा- पत्नी गहरी नींद में सो रही है। उसके चेहरे पर तृप्ति और प्रसन्नता स्पष्ट रूप से छलक रही है।

पुष्पचूल दबे पाँव उठा पर बाहर जाने से पूर्व उसने सोचा- कहीं अचानक किसी कार्य से युवरानी की आँख खुल गयी और मुझे नदारद पाया तो व्यर्थ ही बात बिगड़ जायेगी। युवराज ने आवाज की ताकि युवरानी की आँख खुल जाय और वही हुआ।

युवराज को पास में न देखकर वह हडबडाकर उठ बैठी। युवराज को पानी की तिपाही के पास खडा देखकर कहा- अरे! आप क्यों उठे, मुझे क्यों नहीं जगाया? पुष्पचूल ने हँसते हुए कहा- तुम इतना सब कुछ करती हो! क्या मैं पानी के लिये भी नहीं उठ सकता। तुम चिन्ता मत करो, आज तुमको भी पानी मैं ही पिलाऊंगा। तुम उठ गयी तो तुम्हें मेरी कसम है।

इसके पीछे युवराज की योजना थी। वह जाने से पूर्व युवरानी को बेहोश करना चाहता था। उसके पास ऐसा चूर्ण था जो तीन घंटे तक बेहोशी दे सकता था। उसने चुपके से एक पुडिया निकाली, उसमें से चूर्ण निकाला और वह चूर्ण एक फूल पर छिडक दिया। फूल और पानी की गिलास

युवरानी को देते हुए कहा- देखो यह फूल कितना विशिष्ट है। मैं तुम्हारे लिये विशेष रूप से लाया था।

समर्पण से ओतप्रोत हृदय! उसे क्या पता था कि वह किसी षडयंत्र का शिकार हो रही है। शिकार करने वाला भी कोई और नहीं बल्कि उसका अपना वो प्रियतम जिसके साथ उसने पवित्र अग्नि की साक्षी में फेरे लेकर जीवन के तार जोडे थे।

युवरानी ने प्रेमोपहार समझकर सहजता से लिया और नाक से लगा लिया। सुगंध लेते ही उसकी आँखें भारी होने लगी। उसने कहा- मुझे नींद आ रही है। आप भी सो जाईये, अभी रात बाकी है।

युवराज को जब विश्वास हो गया कि युवरानी गहरी नींद सो गयी है तो वह चुपचाप गुप्तमार्ग से बाहर आया। उसका एक साथी बादल घोडा लेकर बाहर ही खड़ा था। युवराज ने उसके हाथ से घोड़े की वल्गा अपने हाथ में ली और घोडे पर बैठ गया। पीछे बादल भी बैठ गया। दोनों के बैठते ही घोड़ा हिनहिनाया और अपने स्वामी के संकेत पर दौड़ने लगा।

ढींपुरी नगरी में अंधकार ने अपना साम्राज्य बिछा दिया था। नगरसेठ के भवन का पीछे का भाग तो और भी अंधेरे में डूबा हुआ था। पुष्पचूल के अतिरिक्त चारों साथी वहाँ पहुँच गये थे। युवराज ने दो साथियों को गली के दोनों किनारों पर रखा ताकि आने जाने वालों की निगरानी रख सके। स्वयं दो साथियों के साथ उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ से उसे अंदर प्रवेश करना था। अंदर प्रवेश करने का एक ही उपाय था कि दीवार में एक बहुत बड़ा छेद करना। वह अपने साथ ऐसे तीखे हथियार लेकर आया था जिनसे बिना आवाज के खड्डा किया जा सके।

उसने अपने औजार बाहर निकाले। इष्ट का स्मरण कर हथियार चलाना प्रारंभ किया। दीवार मजबूत थी। तोडने में श्रम कुछ ज्यादा करना पड़ा पर आखिर उसे सफलता मिल ही गयी। शरीर समेटकर अंदर घुसने में वह चतुर था। सर्वप्रथम उसने ही उस टूटे भाग से अंदर प्रवेश किया और एकदम सुरक्षित वातावरण देखकर साथियों को भी बुला लिया। अंदर भयानक अंधेरा था। उसने सोचा- आज कोई बहुत अच्छा शकुन लेकर वह निकला है। आज की यह मेरी हाथ मारने की कला हमें लम्बे समय तक आर्थिक परेशानियों से मुक्त रखेगी।

उसने अपने दोनों साथियों को मोटे वस्त्र से टूटे भाग पर आवरण करके खड़ा होने का आदेश दिया और स्वयं ने चकमक से अग्नि प्रज्ज्वलित कर मद्धिम प्रकाश की व्यवस्था कर ली।

उस कक्ष में खजाना भरा पड़ा था। मद्धिम प्रकाश में देखने का वह आदी था। उसने देखा- बहुत सारी पेटियाँ रखी हुई है। कुछ पेटियाँ तालाबंद थी और कुछ तालामुक्त।

उसने समय खोये बिना जल्दी से छोटे से औजार से एक पेटी का ताला तोड़ा। ज्योंहि पेटी खोली- अलंकार का भंडार प्रकट हो गया। उसने सोचा- इस खजाने को एकत्र करने में नगरसेठ की पीढियाँ लगी होगी जबकि इसे गँवाने में मात्र कुछ घण्टे ही लगेंगे। सत्य है कि बनाने में युगों लगते है जबकि बिगाडने में उतने पल भी नहीं लगते।

शायद नगरसेठ को पता भी नहीं होगा कि उसके भंडार में कितनी पेटियाँ पड़ी है। उसे इस आज होने बाली चोरी का भी अहसास लम्बे समय तक नहीं होगा। हाँ अगर ये सारे आभूषण बहिखाते में लिखे हुए होंगे और कभी कोई जरूरत पडेगी तो पता चलेगा कि कितना माल गायब है पर तब भी यह तो पूरी जिंदगी तक नहीं जान पायेगा कि कब गया? बिचारा सेठ...। गहरी नींद में सपने देखने में मस्त होगा और इधर हम उसके माल से मालामाल हो जायेंगे। युवराज सोचता जा रहा था और हाथों से आभूषण अपने झोले में डालता जा रहा था। दो पेटी खाली करने में ही उसे काफी समय लग गया। उसने सोचा- ज्यादा लोभ उसे कष्ट पहुँचा सकता है। युवरानी की नींद खुल गयी तो सारे परिश्रम पर पानी फिर जायेगा।

उसने बाहर निकलने के लिये ज्योंहि कदम बढाया- पता नहीं कौनसे स्थान पर उसका पाँव आ गया कि पूरे भवन में घंटियाँ बज उठी। युवराज चमका। उसने साथियों को संकेत से भागने का आदेश दिया। भागते हुए सभी का पाँव भी पुनः उसी स्थान पर गिरा और घंटनाद पुनः पूरे महल में होने लगा। पूरा भवन प्रकाश से जगमगा उठा। मशाल का प्रकाश लेकर भागते लोगों के पाँवों की आवाज युवराज के कान फोड़ने लगी।

(क्रमशः)

प्रेरणात्मक कथा

मोबाइल फोन का नशा

–प्रस्तुति : गौतम संकलेचा

रविवार, छुट्टी का दिन था। सुरभि के पड़ोसी आदित्यजी की दो साल की प्यारी बच्ची सुरेखा अक्सर उसे मुँह में दूध की बोतल लगाये बरामदे में घूमती हुई सुबह दिख जाती थी। लेकिन आज वह नहीं दिखी। अचानक उसके मन में नकारात्मक विचार आने लगे। वह आशंकित हो उठी। कहीं सुरेखा की तबियत तो खराब नहीं हो गई या किसी ने... नहीं, नहीं, उसे कुछ नहीं हो सकता। इतनी प्यारी बच्ची... तभी उनके बरामदे में गिरी दूध की बोतल उसे दिखी जिसे आदित्यजी का कुत्ता मुँह से पकड़ने की कोशिश कर रहा था लेकिन जंजीर में बँधे होने के कारण उसे पकड़ नहीं पा रहा था। अचानक वह कान खड़े कर सावधान मुद्रा में खड़ा हो गया और फिर जोर-जोर से भौंकने लगा।

सुरभि ने आगे बढकर उसकी जंजीर खोल दी। कुत्ता दौड़ते हुए नाले के पास पहुंचा और नाले में से किसी चीज को मुँह से खींचकर बाहर लाने की कोशिश करने लगा। सुरभि जिज्ञासावश पास पहुंची तो उसका मुँह खुला का खुला रह गया।

नाले में गिरी सुरेखा के पास ही उसकी गेंद पड़ी हुई थी और वह बेहोश हो चुकी थी। वह सुरेखा को बाहर निकाल सीने से चिपकाए आदित्यजी के घर के अंदर भागते हुए पहुंची। आदित्यजी और उनकी पत्नी दोनों चाय की खाली प्याली सामने मेज पर छोड़कर अपने-अपने मोबाइल में खोये हुए थे। सुरभि की आवाज सुनकर दोनों का ध्यान जब उस तरफ गया तो दोनों की एक ही बार चीख निकल गई- क्या हुआ सुरेखा को, क्या हुआ मेरी बेटी को!

सुरभि बोली- भाई साहब, जल्दी गाड़ी बाहर निकालिये और अस्पताल ले चलिए, बाद में बातें करेंगे। सुरेखा को लेकर सभी अस्पताल पहुंचे। काफी कोशिश के बाद दोपहर को सुरेखा ने अपनी आँखें खोली। फिर सुरभि ने सबको सारी बातें बताई और साथ ही उन दंपति से बोली- हम इंसानों से अच्छा तो वह जानवर है जिसे किसी प्रकार का तकनीकी ज्ञान नहीं, हमारे प्रति स्नेह भी रखता है और हमारे लिए फिक्रमंद भी रहता है। दोनों की आँखों में पश्चात्ताप के आँसू थे। शायद उन्हें जिन्दगी का सबसे बड़ा सबक मिल चुका था।

❋

अवसर की पहचान

एक बार एक ग्राहक चित्रों की दुकान पर गया। उसने वहां पर अजीब से चित्र देखे। पहले चित्र में चेहरा पूरी तरह बालों से ढका हुआ था और पैरों में पंख थे। एक दूसरे चित्र में सिर पीछे से गंजा था। ग्राहक ने पूछा- यह चित्र किसका है?

दुकानदार ने कहा- अवसर का।

ग्राहक ने पूछा- इसका चेहरा बालों से ढका क्यों है? दुकानदार ने कहा- क्योंकि अक्सर जब अवसर आता है तो मनुष्य उसे पहचानता नहीं है।

ग्राहक ने पूछा- इसके पैरों में पंख क्यों है?

दुकानदार ने कहा- वह इसलिए कि यह तुरंत वापस भाग जाता है। यदि इसका उपयोग न हो तो यह तुरंत उड़ जाता है।

ग्राहक ने पूछा- और यह दूसरे चित्र में पीछे से गंजा सिर किसका है?

दुकानदार ने कहा- यह भी अवसर का है।

यदि अवसर को सामने से ही बालों से पकड़ लेंगे तो वह आपका है। अगर आपने पकड़ने में देरी की तो पीछे का गंजा सिर हाथ आएगा और वो फिसलकर निकल जाएगा।

वह ग्राहक इन चित्रों का रहस्य जानकर हैरान था पर अब वह बात समझ चुका था। आपने कई बार दूसरों को यह कहते हुए सुना होगा या खुद भी कहा होगा कि हमें अवसर ही नहीं मिला। लेकिन ये अपनी जिम्मेदारी से भागने और अपनी गलती को छुपाने का बस एक बहाना है। ढेरों अवसरों के बीच हमारा जन्म हुआ है।

अवसर हमारे सामने से आते-जाते रहते है पर हम उसे पहचान नहीं पाते। पहिचानना सीखें और सुखी बनें।

❋

प्रेरणात्मक कथा

व्यर्थ के सपने

–प्रस्तुति : गौतम संकलेचा

एक बार की बात है। एक गरीब किसान एक जमींदार के पास गया और बोला– आप एक साल के लिए अपना एक खेत मुझे उधार दे दीजिये। मैं उस खेत में मेहनत करके अपने लिए अनाज उगाऊँगा। जमींदार एक दयालु व्यक्ति था। उसने उस किसान को एक खेत एक साल के लिए उधार दे दिया।

साथ ही साथ उस किसान की मदद के लिए उसने पाँच व्यक्ति भी दिए। वह किसान उन पाँच व्यक्तियों को लेकर घर आ गया और उस खेत में काम करने लगा। एक दिन उस किसान ने सोचा। जब पाँच लोग इस खेत में काम कर रहे है तो मैं क्यों काम करूं?

किसान काम छोड़कर अपने घर वापस आ गया और मीठे–मीठे सपने देखने लगा। एक साल बाद मेरे खेत में आनाज ऊगेगा। उसे बेचने पर मेरे पास बहुत से पैसे आयेंगे और उन पैसों से मैं बहुत कुछ खरीदूँगा।

उस किसान को जो पाँच व्यक्ति मिले थे। वे खेत में अपनी मर्जी से काम कर रहे थे। जब उनका मन करता था। वे खेत में पानी दे देते थे। जब मन करता था वे खेत में खाद डाल देते थे। उस खेत में लगी फसल धीरे–धीरे बड़ी हो रही थी लेकिन वह किसान अपनी फसलों को देखने खेत में नहीं आया। वह हर रोज सपने देखता रहा।

अब फसल काटने का समय आ चुका था। किसान अपने सपनों के साथ खेत में पहुँचा। फसल देखते ही वह चौंक गया क्योकि फसल अच्छी नहीं थी। उस फसल से उसे उतना पैसा भी नहीं मिल रहा था, जो उसने फसल उगाने में खर्च किया था। एक साल पूरा हो चुका था।

वह जमींदार किसान से अपना खेत लेने वापस आया। उस जमींदार को देखकर वह किसान रोने लगा और फिर से एक साल का वक्त माँगने लगा। किसान की बात सुनकर जमींदार बोला– यह मौका बार–बार नहीं मिलता। यह कहकर वह जमींदार वहाँ से चला गया।

वह गरीब किसान रूपक मात्र है। उस किसान के स्थान पर स्वयं को देखें। वह खेत हमारा शरीर है। पाँच व्यक्ति जो किसान की मदद के लिए दिए गए थे। वे हमारी पाँच इन्द्रियाँ है। अब आप इन पाँच इन्द्रियों का उपयोग किस तरीके से करते है, ये हम पर निर्भर है।

शिक्षा– एक समय ऐसा भी आयेगा। जब मृत्यु सन्निकट होगी। उस समय कोई आपसे पुछे कि– तेरे पास पांच इन्द्रियां थी उनका किस तरीके से उपयोग किया? प्रत्युत्तर में संतुष्टि नहीं मिली तो उस समय कैसे बचोगे? कैसे जीवन को सफल बनाओगे? इस बात को गांठ बांध लीजिए यह मौका (मानव भव) बार–बार नहीं मिलता।

खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य भगवन्त

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा

के अवतरण दिवस (61 वें वर्ष में प्रवेश) पर

वंदनाएँ... ढेर सारी शुभकामनाएँ...

वंदनकर्ता : शा. तेजराज धुडाजी कांकरिया

महावीरकुमार, हितेशकुमार, प्रदीपकुमार

सिवाना-हुब्बल्ली

पायल बागरेचा की दीक्षा संपन्न नया नाम साध्वी पर्वप्रभाश्रीजी घोषित

बालोतरा 7 फरवरी 2020। बालोतरा-पचपदरा रोड पर निर्मित रणूजा तीर्थ में 7 फरवरी 2020 को संयम पथ की पथिक वैराग्यवती सुश्री पायल बागरेचा (सुपुत्री मंजुदेवी अशोककुमारजी बागरेचा) ने सांसारिक जीवन को छोडकर दीक्षा ग्रहण की।

अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब, पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा., पूज्या साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा., पूज्या साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा., पूज्या साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.सा. आदि विशाल साधु-साध्वी वृंद के सानिध्य में यह आयोजन बी.एन. ग्रुप लुंकड परिवार द्वारा संपन्न हुआ।

दि. 3 फरवरी 2020 को प्रातः पूज्य अवंति तीर्थोद्धारकश्री आदि विशाल श्रमण-श्रमणी वृंद का अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा महोत्सव हेतु शुभ प्रवेश हुआ। प्रवेश की विशाल शोभायात्रा श्री विमलनाथजी मंदिर से प्रारंभ होकर रुघजी की पोल, संभवनाथजी मंदिर होते हुए पचपदरा रोड स्थित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ रणुजा तीर्थ में प्रविष्ठ हुई। प्रवेश के साथ ही मुमुक्षु सुश्री पायल बागरेचा घर से विदाई लेकर रणुजा तीर्थ में प्रवेश शोभायात्रा के साथ पहुंची।

दि. 4 फरवरी 2020 को विजय मुहूर्त्त में दीक्षा निमित्त डोरा बंधन की रस्म आयोजित की गई। संयम के उपकरणों एवं पूज्य गुरु भगवंतों पर केशर छांटणा कर केशरिया माहौल में दीक्षार्थी ने गुरु भगवंतों से आशीर्वाद प्राप्त कर हितशिक्षा ग्रहण की।

दि. 5 फरवरी 2020 की शाम को रणुजा तीर्थ पर निर्मित विशाल वाराणसी नगर के विशाल पांडाल में संयम संध्या का रंगारंग उत्सव का आयोजन रखा गया। इस आयोजन में बालक-बालिकाओं ने नृत्य कर सभी का मन मोहा तो मुमुक्षु के भाई-बहिनों द्वारा संयम के भावों के अभिनंदन एवं मुमुक्षु पायल के साथ घटित संस्मरणों को बयां कर माहौल को वैराग्य से भीगो दिया। संयम संध्या उत्सव का संचालन मुकेश लुंकड ने किया।

दि. 6 फरवरी 2020 को वर्षीदान शोभायात्रा का जूना कोर्ट से संभवनाथजी मंदिर होते हुए हॉस्पिटल रोड स्थित शांतिनाथजी मंदिर पर समाप्त हुई। शोभायात्रा में हजारों लोगों ने हाथ जोड़कर मुमुक्षु पायल बागरेचा का अभिवादन कर संयम मार्ग पर जाने की शुभकामनाएँ अर्पण की। शांतिनाथजी मंदिर से समस्त जनसमूह रणुजा तीर्थ पहुंचकर अंजनशलाका महोत्सव के अंतर्गत चल रहे जन्म कल्याणक विधान में सम्मिलित होकर पांडाल में वर्षीदान करते हुए सांसारिक वस्तुओं को त्याग करने का अपना पुनीत संकल्प प्रस्तुत किया।

रात्रि में मुमुक्षु अभिनंदन समारोह का भावनात्मक उत्सव आयोजित था, जिसमें प्रसिद्ध संगीतकार अनील सालेचा

ने संयम के भावों की अनुपम प्रस्तुति देते हुए वर्तमान में दीक्षा के पथ पर चलने वाली मुमुक्षु पायल की शतशः अनुमोदना की। साथ ही विशेष रूप से पधारे सुस्वर के धनी श्री गौतम भाई बारिया ने दीक्षा के भावों के अनेक गीतों का संगान किया। इसी समारोह में बालोतरा की विविध संस्थाओं ने मुमुक्षु का प्रशस्ति पत्र के साथ अभिनंदन किया।

अभिनंदन समारोह के बीच माता-पिता के उपकारों के प्रति समर्पित बनते हुए मुमुक्षु पायल ने पांवों का प्रक्षाल कर अपनी समस्त गलतियों के प्रति क्षमायाचना की एवं माता-पिता, परिवार जन सहित सकल संघ को अक्षतों से वर्धापना करते हुए आशीर्वाद के अक्षतों की कामना की।

समारोह के अंत में मुमुक्षु का मार्मिक उद्‌बोधन हुआ, जिसमें स्वयं के चारित्र भावों की क्रमशः परिणति का वर्णन करते हुए पूज्य खरतरगच्छाधिपतिश्री एवं गुरुवर्या साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. के उपकारों के लिए हार्दिक प्रसन्नता सहित गौरव की अनुभूति बताया। साथ ही स्कूल-कॉलेज लाइफ के अनेक मित्र व सहेलियों का दीक्षा के प्रत्येक कार्य में उत्साह से भाग लेने पर आभार व्यक्त किया। अपनी बडी बहिनों मोनिका, टीना एवं जीयाजी मुकेश लुंकड के अपार वात्सल्य के प्रति धन्यवाद अभिव्यक्त किया। रात्रि 11:45 बजे तक चले अभिनंदन समारोह में अंत तक पांडाल में एक ही बात की चर्चा थी कि ऐसा अभिनंदन समारोह बालोतरा में प्रथम बार हो रहा है।

दि. 7 फरवरी 2020 को दीक्षा उत्सव का चिरप्रतीक्षित आयोजन था। जिस दिन की प्रतीक्षा बालोतरा वासियों को पिछले चार महिनों से थी। आज प्रातः 5:30 बजे मुमुक्षु की अस्थाई आवास को अलविदा कहते हुए बाजते-गाजते दीक्षा पांडाल में श्रीसंघ के साथ प्रवेश किया।

विधिवत् समवशरण की प्रदक्षिणा लगाते हुए परमात्मा की पूजा कर अक्षतों व पुष्पों की वर्षा कर अपने अपूर्व उल्लास की समर्पणा प्रभु-चरणों में निवेदित करते हुए परमात्मा के कंठ में स्वर्ण-शृंखला समर्पित की। इसके बाद पूज्य गुरु भगवंत एवं साध्वीवर्याओं को अक्षतों से बधाते हुए स्वर्ण-रौप्य मुद्रिकाओं से गुरु पूजन एवं कामली आदि से गुरु भक्ति का भाव प्रकट किया। पूज्य खरतरगच्छाधिपतिश्री को स्फटिक रत्नमयी गौतमस्वामी की दिव्य मूर्ति बहोरायी।

समारोह में दीक्षा व प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजक लुंकड़ परिवार की ओर से दीक्षार्थी का अंतिम विदाई तिलक कर विदाई दी गई। तत्पश्चात् मुमुक्षु के परिवार एवं वैरागी भाई-बहिनों ने तिलक कर चारित्र पथ पर चलने की अंतिम विदाई दी।

संयम की तीव्र झंखना आज मुमुक्षु पायल के रोम-रोम से प्रस्फुटित हो रही थी। परिवार जनों ने पूज्य खरतरगच्छाधिपतिश्री से पायल को प्रव्रजित करने का निवेदन किया तो मुमुक्षु पायल ने शीघ्र दीक्षित करने की विनीत बनकर विनंती की। पूज्य गुरुदेवश्री ने समवशरण में बिराजित परमात्मा के समक्ष दीक्षा विधि के अंतर्गत देववंदन आदि विधि करवाते हुए चारित्र की व्याख्या एवं मुमुक्षु पायल के भावों की तीव्रता की व्याख्या की।

मुमुक्षु पायल ने अपने अंतिम उद्‌गार में कहा कि भौतिक संसाधनों से क्षणिक सुख मिलता है, वहीं संयम से

आत्मीय सुख के साथ जीवन में अद्‌भुत आनंद मिलता है। सभी से क्षमायाचना करते हुए अपने संकल्प में ''संयमी वेश को न गिरने दूंगी... न मिटने दूंगी'' दोहराते ही उपस्थित अपार जनसमूह ने तालियों की गडगडाहट के बीच दीक्षार्थी एवं जिनशासन की जय-जयकार की।

खरतरगच्छाधिपतिश्री ने अंतिम बार मुमुक्षु के भावों की परीक्षा करने के पश्चात् ज्योंहि पायल को रजोहरण प्रदान किया त्योंहि मुमुक्षु पायल सहित उपस्थित विशाल जनसमूह चारित्र के प्रति अहोभाव से भर उठा। रजोहरण प्राप्ति के अनिर्वचनीय उल्लासपूर्वक नृत्य करते हुए परमात्मा की प्रदक्षिणा कर वेश परिवर्तन हेतु प्रस्थान किया।

वेश परिवर्तन के पश्चात् लोच विधान, सावद्य योग का प्रत्याख्यान एवं नामकरण की विधि संपन्न की गई। श्री गौतमचंदजी भंसाली परिवार ने नूतन नामकरण का विशिष्ट लाभ प्राप्त कर नया नाम साध्वी पर्वप्रभाश्रीजी म. घोषित किया। संयमी जीवन के सहायक उपकरणों को समर्पित करने का अनेक लोगों ने लाभ लिया।

दि. 8 फरवरी को अस्थाई आवास पर नूतन साध्वीजी पर्वप्रभाश्रीजी म. का पूज्य गच्छाधिपतिश्री एवं साधु-साध्वी वृंद सहित सकल संघ के साथ पदार्पण हुआ। पारणा एवं पद-चिन्ह अंकित कर संघ ने बधाया।

मुमुक्षु कुमारी पायल अशोककुमारजी बागरेचा की दीक्षा के समय संपन्न

उपकरण आदि के लाभार्थी

- 卐 काम्बली - श्रीमती इन्द्रादेवी धनराजजी पारसमलजी महावीरचंद हितेशकुमार मनीष बागरेचा बालोतरा
- 卐 चादर - श्रीमती इन्द्रादेवी धनराजजी प्रकाशजी शांतनु शंखेश बागरेचा बालोतरा
- 卐 पातरा - श्री लक्ष्मीनारायण जी भरतकुमारजी आजाद बालोतरा
- 卐 साडा - श्रीमती इन्द्रादेवी धनराजजी हनुमानदासजी दिलीपकुमार बागरेचा बालोतरा
- 卐 माला - श्रीमती टीपुदेवी मिश्रीमलजी माणकजी बोहरा
- 卐 शास्त्र - शा. मूलचंदजी प्रवीणकुमारजी संकलेचा महाजन बालोतरा
- 卐 डंडा - श्री खरतरगच्छ संघ बालोतरा
- 卐 डंडासन - शा. संतोषकुमारजी माणकचंदजी चौपडा एमबीआर बालोतरा
- 卐 आसन - श्रीमती इन्द्रादेवी धनराजजी पारसमलजी महावीरचंद हितेशकुमार मनीष बागरेचा बालोतरा
- 卐 संथारिया - श्रीमती चतुदेवी मोहनलालजी संकलेचा बालोतरा बाडमेर
- 卐 ठवणी - शा. बंशीधरजी विनोदकुमारजी सेठिया चौहटन
- 卐 पूंजणी - श्री श्वे. मूर्तिपूजक जैन संघ बालोतरा
- 卐 उत्तरपटा - शा. प्रकाशचंदजी हितेशकुमारजी मेहता बालोतरा बाडमेर
- 卐 माता पिता - श्रीमती उगमदेवी कांतिलालजी धनराजजी बागरेचा बालोतरा
- 卐 भुआ भुडोसा नामकरण - शा. गौतमचंदजी मुकेशकुमारजी नीतेशकुमारजी विजयराजजी भंसाली बालोतरा

आचार्य भगवन्त खरतरगच्छ की शान है।

—गौतम संखलेचा चमन

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी खरतरगच्छ की शान है।
चमकते हीरे पन्नों सी सद्गुणाँ की खान है।
कंठ में सरस्वती तपो बल से पाई रिद्धि सिद्धि,
सदा हसमुख शब्द-शब्द में घुली हुई जान है।
उनके इक आह्वान पर लक्ष्मी की कृपा बरसती,
बन जाते बड़े तीर्थ इतिहास की अमिट आन है।।
न भेद न खास कोई सिर्फ जैनम् जयति शासनं,
इनके आभा मंडल में होता सबका बखान है।
कर्म प्रदत्त शास्त्रों से भरी इनके जीवन शैली की लौ,
आने वाले की भावना भाँप लेते तुरन्त संज्ञान है।
मरुधरा के लाल कल्पना के भंडार नव उद्गार,
पूरा संघ करते रहते इनके कार्य का बखान है।
सूख न पाए सरिता जल की ये इनकी सोच रही,
हिमालय से ऊँचे श्रावक झील सी प्रवहमान है।।
मधुर वाणी सहज सरल निश्चल मन से कार्य करते,
दीपक पग-पग जलकर फूल सदा ऊपर खिलते मान है।
मधुर कल्पना मीठे स्वर वीणा की झंकार लगे।
भक्त बढ़ते रहे सदा देते रहते अकल्पनीय दान है।

दो पुस्तकों का विमोचन

खेतासर 16 फरवरी। श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं श्री जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी की प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा संपादित दो पुस्तकों का विमोचन ता. 16 फरवरी 2020 को किया गया।

'श्री सिद्धाचल तारणहार रे' नामक पुस्तक का विमोचन मूल झुंझनु वर्तमान जयपुर निवासी श्री सुनीलकुमारजी महमवाल परिवार ने किया तथा 'मनी मेनेजमेंट' नामक पुस्तक का विमोचन चित्तौड़ निवासी श्री जीवराजजी खटोड़ परिवार ने किया। श्री सिद्धाचल तारणहार रे नामक पुस्तक में श्री सिद्धाचल से संबंधित चैत्यवंदन, स्तुति व स्तवनों का संग्रह है। मनी मेनेजमेंट नामक पुस्तक व्यावहारिक व्यवस्थाओं पर आधारित है।

1. प्रकाशक स्थान	–	माण्डवला, जिला जालोर (राज.)
2. प्रकाशन अवधि	–	मासिक
3. मुद्रक का नाम	–	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	–	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	–	नहीं
पता	–	जहाज मॉदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
4. प्रकाशक का नाम	–	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	–	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	–	नहीं
पता	–	जहाज मॉदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
5. सम्पादक का नाम	–	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	–	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	–	नहीं
पता	–	जहाज मॉदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
6. उनके नाम व पते जो समाचार पत्रें के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के 1% से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।		श्री जिनकॉतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला, जिला-जालौर (राज.)

मैं डॉ. यू. सी. जैन, जहाज मॉदिर, माण्डवला, जिला-जालोर (राज.) द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हाला संघ द्वारा निर्मित जिनालय की प्रतिष्ठा संपन्न

हाला संघ के इतिहास में जुडा स्वर्णिम पृष्ठ

मुमुक्षु पूजा संकलेचा बनी साध्वी सहजप्रज्ञाश्रीजी म.

बाडमेर 26 फरवरी। श्री जैन श्वे. खरतरगच्छीय हाला संस्थान द्वारा नवनिर्मित श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय का प्रतिष्ठा महोत्सव सुनहरे माहौल में जिनशासन की विशिष्ट प्रभावना के साथ सुसंपन्न हुआ। यह आयोजन पूजनीय खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा के निर्देशन में हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रथम दिन दि. 24 फरवरी को विहरमान गच्छाधिपतिश्री सहित 40 साधु-साध्वीवर्याओं ने नगर प्रवेश किया तो मानो पूरा बाडमेर शहर अपने गुरु के लिए पलक पावडें बिछाकर स्वागत करते नजर आया। खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के साथ उनके शिष्य मुनि मयंकप्रभसागरजी म.सा., मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा., मुनि मेहुलप्रभसागरजी म.सा., मुनि मयूखप्रभसागरजी म.सा., मुनि महितप्रभसागरजी म.सा. व आज्ञानुवर्तिनी साध्वीवर्या कल्पलताश्रीजी म.सा., हेमरत्नाश्रीजी म.सा.आदि साध्वी मण्डल के नगर प्रवेश की शोभायात्रा जैन छात्रावास स्टेशन रोड़ से प्रारम्भ हुई। जिसमें दीक्षार्थी बहिन कुमारी पूजा संकलेचा हाथी पर सवार होकर शहरवासियों का अभिवादन कर रही थी। शोभायात्रा शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई 4 किमी की दूरी तयकर लंगेरा रोड़ मन्दिर परिसर पहुंचकर धर्मसभा में परिर्वतित हुई।

इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री कैलाश चौधरी, बाड़मेर विधायक मेवाराम जैन, नगर परिषद के सभापति दीपक माली, भाजपा जिलाध्यक्ष आदूराम मेघवाल बतौर अतिथि उपस्थित रहे। केन्द्रीय मंत्री कैलाश चौधरी ने कहा कि बाड़मेर का अहोभाग्य है कि गुरुदेव के सानिध्य में ये भव्य आयोजन हो रहा है। जैन धर्म अपने आप में विराट है, संयम पथ पर जा रही बहिन को मेरी ओर से शुभकामनाएं। बाड़मेर विधायक मेवाराम जैन ने कहा कि ये अच्छा संयोग है कि एक ओर तीर्थंकर परमात्मा बाड़मेर में विराजेंगे और दूसरी ओर इसी पथ पर चलकर मुमुक्षु पूजा आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होगी।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि मुक्ति का मार्ग केवल एक ही है वो संयम जीवन। उन्होंने कहा कि गौडी पार्श्वनाथ भगवान इस धरा पर विराजमान होंगे। प्रतिष्ठा का हिस्सा बनना बडे सौभाग्य की बात है। धर्मसभा में ज्ञान वाटिका का संचालन कर रही शिक्षिकाओं व विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रथम दिन प्रातः कुम्भ स्थापना, दीप प्रज्ज्वलन एवं ज्वारारोपण सहित अनेक पूजन विधि-विधान के साथ आयोजित किए गए।

महोत्सव के द्वितीय दिन दि. 25 फरवरी को प्रतिष्ठा व मुमुक्षु पूजा संखलेचा की दीक्षा का वर्षीदान का वरघोड़ा

निकाला गया। इस वरघोड़े में देशभर के हजारों श्रद्धालु साक्षी बनें। वरघोडे में मुमुक्षु पूजा के साथ-साथ नेहा बोथरा, रेखा सेठिया भी साथ रही। विशाल एवं भव्य वरघोड़ा श्री पार्श्वनाथ जिनालय महावीर चौक, कल्याणपुरा से प्रारम्भ हुआ। वरघोड़े को नाकोड़ा ट्रस्ट अध्यक्ष रमेशजी मुथा, नाकोड़ा ट्रस्ट के उपाध्यक्ष गणपतराज चौधरी, संघवी तेजराज गुलेच्छा, कुशल गुलेच्छा, प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के संयोजक रतनलाल हालावाला, अध्यक्ष रविन्द्र जैन रतनपुरा ने हरी झण्ड़ी दिखाकर रवाना किया।

वरघोड़ा के बाद गौड़ी पार्श्वनाथ पेढी, मंगल घर, केशर कक्ष आदि का फीता खोलकर शुभारंभ लाभार्थियों द्वारा किया गया। दोपहर में मेहन्दी एवं सकल संघ की महिलाओं द्वारा बड़ी सांझी, रात्रि में दीक्षार्थी बहिन पूजा संकलेचा का विदाई कार्यक्रम का आयोजन हुआ जो शानदार रहा।

महोत्सव के तृतीय दिन दि. 26 फरवरी को अलसुबह ही हजारों की जनमेदिनी पंडाल में दीक्षा देखने के लिए उपस्थित हो गई थी। देखते ही देखते वो घड़ी आ गई जब गच्छाधिपतिश्री के करकमलों से मुमुक्षु पूजा संखलेचा को रजोहरण प्राप्त हुआ और रजोहरण मिलते ही मुमुक्षु पूजा खुशी से झूम उठी और नृत्य करते हुए वेश परिवर्तन के लिए प्रस्थान कर श्वेत श्रमण वेश धारण कर दीक्षा मण्डप में आई और गच्छाधिपति ने संयम प्रतिज्ञा प्रदान कर मुमुक्षु पूजा संखलेचा को जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करवाई और नूतन नाम साध्वी सहजप्रज्ञाश्रीजी प्रदान कर गच्छाधिपति की निश्रा में प्रवर्तिनी महोदया शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या घोषित किया।

गादीनशीन हुए गौडी पार्श्वनाथ भगवान- 26 फरवरी का दिन सुनहरे इतिहास के सुवर्णमय पृष्ठ में दर्ज हो गया। ओं पुण्याहं-पुण्याहं, प्रियन्तां-प्रियन्तां के पवित्र स्वर गूंज उठे। आचार्य भगवंत, मुनि भगवंत, साध्वी भगवंत भी प्रभुजी के पास आ खड़े थे। प्रतिष्ठा की मंगल शुभ घड़ी के कुछ क्षण बाकी थे और आचार्य भगवंत के मुखारविंद से मंत्रोच्चार के स्वर गूंजे- 'ओं कूर्म: निज पृष्ठे जिनबिम्बं धारय-धारय स्वाहा'' श्वास स्तंभन हुआ और जिस शुभ घड़ी, शुभ क्षण का इंतजार था... वो क्षण आ गये। बहु प्रतीक्षित प्रतिष्ठा महोत्सव में बिराजित होने वाले प्रभु श्री गौडी पार्श्वनाथ व शंखेश्वर पार्श्वनाथ परमात्मा, दादा गुरुदेव सहित अन्य देवी-देवताओं को गादीनशीन किया गया, जिसमें मूलनायक भगवान को प्यारीदेवी मांगीलाल गोलेच्छा हालावाला परिवार द्वारा विराजमान किया गया। गौडी पार्श्वनाथ प्रभु के शिखर पर श्रीमती गोदावरी देवी व्यापारीलालजी बोहरा हालावाला परिवार की ओर से कायमी ध्वजा चढाई गई। मुख्य स्वर्ण कलश एवं गुरु गौतमस्वामी की ध्वजा का लाभ श्री रवीन्द्रजी रतनपुरा बोहरा ने लिया तो दादा गुरुदेव की ध्वजा श्रीमती लुणीदेवी नेमीचन्द संखलेचा सियाणी वालों की ओर से चढाई गई।

प्रतिष्ठा के पश्चात् महोत्सव के लाभार्थी एवं सहयोगियों का बहुमान अतिथियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक शरद चौधरी, इनकम टैक्स सेटलमेन्ट कमीशन उपप्रमुख मुम्बई के किशनलाल माहेश्वरी, एडीजे सुशील जैन सहित अतिथियों ने हिस्सा लिया।

दि. 27 फरवरी को श्री गौड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा के बाद प्रथम बार द्वारोद्घाटन पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु-साध्वी वृंद के सानिध्य में मंत्रोच्चार के साथ किया गया। उसके पश्चात गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन-वन्दन कर पक्षाल, पूजा के बाद सतरभेदी पूजा व दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा का आयोजन किया गया।

द्वारोद्घाटन के लाभार्थी शा. डामरचन्दजी, चतुर्भुजजी, शान्तिलाल, नीरजकुमार छाजेड़ परिवार हरसाणी-मालेगांव वाले रहे। महोत्सव समिति के मुख्य संयोजक रतनलाल बोहरा हालावाला एवं अध्यक्ष रविन्द्र जैन रतनपुरा ने महोत्सव में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग, योगदान देने वाले सभी सज्जनों, संस्थाओं एवं विभागों का धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया और उनके द्वारा दिये गये सहयोग की भूरि-भूरि अनुमोदना की।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी का अभिनव पुरूषार्थ

चतुर्थ दादा गुरुदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की जन्मभूमि पर प्रतिष्ठा संपन्न

खेतासर तीर्थ में इतिहास की रचना हुई

खेतासर 16 फरवरी। चतुर्थ दादा गुरुदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की जन्मभूमि ओसियां तीर्थ के निकट खेतासर तीर्थ में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं श्री जिनचन्द्रसूरि दादावाडी की प्रतिष्ठा अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ ता. 16 फरवरी 2020 को संपन्न हुई।

यह प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गणनायक श्री सुखसागरजी समुदाय के वर्तमान पट्टधर अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म., पू. अमीझराश्रीजी म., पू. मेरुशिलाश्रीजी म. की पावन निश्रा में संपन्न हुई।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री की पावन प्रेरणा से श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी द्वारा भव्य शिखरबद्ध जिन मंदिर एवं दादावाडी का निर्माण किया गया।

इस मंदिर में मुनिसुव्रतस्वामी परमात्मा, दादा जिनचन्द्रसूरि, नाकोडा भैरव एवं अंबिका देवी की प्रतिमाऐं प्रतिष्ठित की गई। बाहर प्रदक्षिणा पथ में दो भव्य देवकुलिकाओं में खरतरबिरुद धारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि एवं खेतासर के रत्न आचार्य श्री भुवनरत्नसूरि की प्रतिमाऐं बिराजित की गई।

समारोह का प्रारंभ ता. 14 फरवरी को पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री आदि साधु-साध्वी मंडल के मंगल प्रवेश से हुआ। प्रवेश शोभायात्रा में खेतासर के साथ-साथ आसपास के गांवों से बडी संख्या में लोग पधारे थे।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने 14 फरवरी पर कहा- हमें परमात्मा से प्रेम करना है। क्योंकि इस जगत में परमात्मा का प्रेम ही स्थायी है। और कोई पदार्थ या कोई व्यक्ति नहीं है, जो हमारे प्रेम को शाश्वत बना सके। परमात्मा का प्रेम हमें शाश्वत बना देता है।

पूज्यश्री ने इस भव्य जिनमंदिर दादावाडी निर्माण के लिये पेढी के पदाधिकारियों व संयोजक श्री मोहनचंदजी ढड्ढा की अनुमोदना की।

ता. 15 फरवरी को भव्य वरघोडा आयोजित किया गया। ता. 16 को मंगल मुहूर्त्त में दिव्य मंत्रोच्चारणों के साथ परमात्मा, गुरुदेव आदि बिंबों की प्रतिष्ठा संपन्न की गई। शिखर पर ध्वजदंड व कलश प्रतिष्ठित किया गया।

मूलनायक परमात्मा को बिराजमान का लाभ संघवी श्री पुखराजजी शांतिदेवी, तेजराजजी गुलेच्छा परिवार मोकलसर-बेंगलुरु वालों ने लिया। जिनालय के शिखर पर ध्वजा का लाभ खेतासर निवासी श्री बाबुलालजी भिकमचंदजी टाटिया परिवार खेतासर वालों ने लिया। स्वर्णकलश का लाभ श्री मुकनचंदजी आलोककुमारजी रायपुर वालों ने लिया।

चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की ध्वजा का लाभ श्री मनसुखलालजी जेठमलजी बोथरा तिंवरी, कलश का लाभ श्रीमती छगनदेवी विरदीचंदजी मालु एवं बिराजमान का लाभ श्री भंवरलालजी विरदीचंदजी छाजेड हरसाणी मुंबई वालों ने लिया। ता. 17 को द्वारोद्घाटन के पश्चात् सतरह भेदी पूजा एवं दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

चातुर्मास उद्घोषणा उत्सव

खेतासर 16 फरवरी। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने समुदाय के साधु-साध्वियों के आगामी चातुर्मास खेतासर प्रतिष्ठा के अवसर पर ता. 16 फरवरी 2020 को प्रतिष्ठा के पश्चात् द्रव्य-क्षेत्रादि का आगार रखते हुए घोषित किये। इस अवसर पर पूज्यश्री ने फरमाया- संघ मर्यादा से बंधा है। उसे सदा-सदा मर्यादा का पालन करते हुए धर्म क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिये। उच्छृंखलता का बहिष्कार होना चाहिये।

कुछ लोग संभावित चातुर्मास के नाम पर चातुर्मास सूची सोश्यल मीडिया पर प्रचारित करते हैं, यह निश्चित ही अनधिकार चेष्टा है। चातुर्मासों की घोषणा होने के पश्चात् ही सूची का प्रकाशन होना चाहिये।

इस वर्ष घोषित चातुर्मास इस प्रकार है-

卐 पू. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा.	बेंगलुरु-बसवनगुडी
卐 पू. मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म.	बडौदा
卐 पू. गणी श्री मणिरत्नसागरजी म.	बीकानेर
卐 पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	सूरत
卐 पू. मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म.	कैवल्यधाम व धमतरी
卐 पू. मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. मोक्षप्रभसागरजी म. मैत्रीप्रभसागरजी म. मननप्रभसागरजी म. कल्पज्ञसागरजी म. समयप्रभसागरजी म. आदि	पालीताना
卐 पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.	पालीताना
卐 पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.	दिल्ली रूपनगर
卐 पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म.	बालोतरा एवं जोधपुर-बाडमेर भवन
卐 पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.	हुबली-दादावाडी
卐 पू. साध्वी श्री चन्द्रकलाश्रीजी म. मणिप्रभाश्रीजी म.	मालपुरा
卐 पू. साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म.	रायपुर-विवेकानंद नगर
卐 पू. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.	पालीताना
卐 पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.	चेन्नई-धोबीपेठ
卐 पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.	पालीताना-मोहनबाग
卐 पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	बेंगलुरु
卐 पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.	रायपुर-दादावाडी
卐 पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.	मुम्बई व सूरत
卐 पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.	जोधपुर व नंदुरबार
卐 पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म.	केकडी
卐 पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.	कोलकाता
卐 पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म.	तिरुपात्तुर

卐 पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म.	दिल्ली-छोटी दादावाडी
卐 पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म.	सांचोर
卐 पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म.	झुंझनु
卐 पू. साध्वी श्री प्रियंवदाश्रीजी म. पू. शुद्धांजनाश्रीजी म.	कोयम्बतूर
卐 पू. साध्वी श्री डॉ. संयमज्योतिश्रीजी म.	उदयपुर
卐 पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म.	नवसारी
卐 पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.	होसापेटे
卐 पू. साध्वी श्री अमीपूर्णाश्रीजी म.	रेहटी म.प्र.
卐 पू. साध्वी श्री विरलप्रभाश्रीजी म.	जावरा
卐 पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म.	पाटण-खरतरगच्छ सहस्त्राब्दी भवन

अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ की प्रथम वर्षगांठ

उज्जैन 8 फरवरी। अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से उज्जैन के अंवति पार्श्वनाथ तीर्थ के त्रिशिखरीय जिनालय की प्रथम वर्षगांठ महोत्सव में दिनांक 8 फरवरी 2020 को धर्मध्वजा फहराई गई। तीन दिवसीय ध्वजारोहण महोत्सव के तीसरे दिन प्रातः मुनि श्री पार्श्वचंद्रविजयजी म., साध्वी प्रशांतगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में ध्वजा वरघोड़ा श्री शांतिनाथ मंदिर से निकला जो विभिन्न मार्गों से होता हुआ श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ दानीगेट पहुंचा।

ध्वजा महोत्सव में प्रातः 8 बजे शांतिनाथ मांगलिक भवन, शांतिनाथ गली सराफा में हुई, जिसके लाभार्थी जिनेश्वर युवा परिषद रही। तत्पश्चात् प्रातः 8 बजे ध्वजा वरघोड़ा शांतिनाथ मंदिर से निकला जो विभिन्न मार्गों से होता हुआ अवंति पार्श्वनाथ मंदिर दानीगेट पहुंचा। रास्ते भर समाजजन भक्ति करते हुए चले तथा अवंति पार्श्वनाथ भगवान के जयकारे लगे। 10.30 बजे सत्तरभेदी पूजन एवं स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया जिसके लाभार्थी बेंगलूरु निवासी संघवी कुशलराज उत्तमचंद ललितकुमार प्रतीक पीयूष विनीत गोलेच्छा परिवार रहे।

जिनेश्वर युवा परिषद के संयोजन में आयोजित महोत्सव में विधिकारक बृजेश जैन द्वारा विधिविधान के साथ 12. 39 बजे अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ की मुख्य ध्वजा के लाभार्थी कुशलराज उत्तमकुमार ललितकुमार गोलेच्छा परिवार ने ध्वजारोहण किया। चिंतामणि पारसनाथ कायमी ध्वजा के लाभार्थी हीरालाल, कुमार विकास बड़ागांव तथा आदेश्वर प्रभु के कायमी ध्वजा के लाभार्थी मांगीलाल, जितेन्द्र, मनीष मालू परिवार थे। -चंद्रशेखर डागा, सचिव

बालोतरा में बी.एन. ग्रुप द्वारा निर्मित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न

बालोतरा 8 फरवरी। बालोतरा-पचपदरा रोड पर नवनिर्मित संकुल रणुजा तीर्थ में संगमरमर के शुभ्र पाषाणों से निर्मित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय की अंजनशलाका प्रतिष्ठा चतुर्विध संघ की आह्लाददायक उपस्थिति में सुसंपन्न हुई। संपूर्ण परिसर निर्माता एवं महोत्सव आयोजक श्री जवाहरलाल किशोरकुमार अशोककुमार पवनकुमार मदनलाल लुंकड परिवार ने अत्यंत उदारता से अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव का पंच दिवसीय आयोजन कर देवगुरु की उल्लसित भावों से भक्ति की।

अंजनशलाका महोत्सव में पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., नूतन आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 7 की पावन निश्रा एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि, पूजनीया साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म. आदि, पूजनीया साध्वी कल्पलताश्रीजी म. आदि, पूजनीया साध्वी प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि, पू. साध्वी मुक्तांजनाश्रीजी म. आदि विशाल साध्वी मंडल का दिनांक 3 फरवरी को मंगल प्रवेश हुआ।

प्रवेश शोभायात्रा विमलनाथजी मंदिर से प्रारंभ होकर रुघजी की पोल, केशरियानाथजी मंदिर, संभवनाथजी मंदिर, नया बस स्टैंड होते हुए रणुजा तीर्थ पहुंची। प्रवेश शोभायात्रा में राजस्थानी गैर नृत्य, गुजराती गरबा नृत्य, बग्घियां सहित मुमुक्षु पायल अशोक कुमारजी बागरेचा का सुसज्जित रथ एवं हजारों श्रावक-श्राविकाओं की माननीय मेदिनी शासन की शोभा बढ़ा रही थी। 3 फरवरी को ही कुंभ स्थापना, नंद्यावृत पूजन आदि विविध पूजनों से शासन देवी-देवताओं का आह्वान किया गया।

दिनांक 4 से 7 फरवरी तक वाराणसी नगरी में पंचकल्याणक महोत्सव की उजवणी की गई जिसमें अनेक रचनात्मक नृत्यों एवं संवादों की प्रस्तुति दी गई। दिनांक 6 फरवरी को मुमुक्षु पायल बागरेचा की वर्षीदान शोभायात्रा शहर स्थित जूना कोर्ट से संभवनाथजी मंदिर तक आयोजित की गई। दिनांक 7 फरवरी को मुमुक्षु पायल बागरेचा की भागवती दीक्षा-विधि प्रात: 6:00 बजे से प्रारंभ हुई। चतुर्मुख परमात्मा की साक्षी से पूज्य अवंति तीर्थोद्धारकश्री ने विधि प्रारंभ करवाई। लुंकड परिवार द्वारा विजयी तिलक किया गया।

दीक्षा के पश्चात परमात्मा श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ के दीक्षा कल्याणक का वरघोड़ा शहर के मुख्य मार्गों से होता हुआ रणुजा तीर्थ में प्रविष्ट हुआ। अनेक हाथी, घोड़े, रथ, विविध मंडलियां एवं विशाल साधु-साध्वी वृंद वरघोड़े की शोभा बढ़ा रहे थे।

दिनांक 8 फरवरी को प्रात: ब्रह्म मुहूर्त में अंजनशलाका का विधान पूजनीय आचार्य भगवंतों के द्वारा संपन्न हुआ। प्रात: काल में प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियों का क्रम प्रारंभ हुआ। पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत एवं नूतन आचार्य भगवंत की पावन निश्रा में परमात्मा के आह्वान एवं विविध भक्ति गीतों के संगानपूर्वक परमात्मा की हृदय में प्रतिष्ठा की भावना लिए श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ परमात्मा सहित मुनिसुव्रतस्वामीजी, गोतमस्वामी, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी, नाकोड़ा भैरव देव, पद्मावती देवी, मणिभद्र वीर, विजयशांतिसूरिजी, विजयराजेंद्रसूरिजी, अंबिका देवी की दिव्य मूर्तियों को मंत्र एवं वास से द्वारा प्रतिष्ठित किया गया।

प्रतिष्ठा की दिव्य ध्वनि श्रवण करते ही लुंकड परिवार सहित सकल संघ हर्ष की हिलोरों के साथ भावविभोर हो गया। प्रतिष्ठा के बाद सामूहिक चैत्यवंदन व अष्ट प्रकारी पूजा विधि विधान के साथ संपन्न करके आरती मंगल दीपक किया गया। तोरण वांदने का लाभ लूंकड़ परिवार के जमाई बंधुओ ने विस्तृत चढ़ावा बोलकर लिया। प्रतिष्ठा के दिन समस्त ओसवाल समाज का न्याति भोज आयोजित किया गया। प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह में आसपास के गांवों सहित

श्रद्धापूर्वक मनाई पुण्यतिथि

हैदराबाद 23 फरवरी। श्री महावीर स्वामी जैन श्वेताम्बर संघ फीलखाना के तत्वावधान में 23 फरवरी को दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी की 687वीं पुण्यतिथि को बड़ी श्रद्धा एवं समर्पण के साथ मनाया गया। सुबह 8.30 बजे श्री महावीर जैन श्वेताम्बर मंदिर फीलखाना से प्रभातफेरी प्रारंभ हुई। सुसज्जित पालकी में विराजित गुरुदेव के साथ, बग्गी में गुरुदेव की तस्वीर एवं सुसज्जित कार में भगवान की तस्वीर, ओपन जीप में जैन ध्वज, ज्ञान वाटिका एवं बाल परिषद द्वारा गुरु स्लोगन, भक्ति गीत पर पारंगत कलाकारों द्वारा घूमर, ढोल नगाड़ों के साथ युवा परिषद द्वारा गीतों पर झूमते गुरु भक्त, महिला परिषद द्वारा गुरुदेव के जयकारों ने प्रभात फेरी में उमड़े विशाल हुजूम को देख गुरु भक्तों का जोश देखते बनता था।

प्रभात फेरी सिद्धीअंबर बाजार होते हुए श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर गोशामहल में दर्शन-वंदन कर शाह इनायतगंज पुलिस स्टेशन होते हुए श्री महावीर मंदिर में पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हुई। धर्मसभा के बाद में दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा पढ़ाई गई। गुरुदेव की तस्वीर के साथ बैठने का लाभ बाबुलाल केसरीमल संकलेचा परिवार एवं भगवान की तस्वीर के साथ बैठने का लाभ मीठालाल मिश्रीमल बाफना परिवार ने लिया। पूजा के पश्चात् अल्पाहार का लाभ श्रीमती सुखीदेवी रायचंद छाजेड़ परिवार ने लिया। इस अवसर पर श्री महावीरस्वामी जैन श्वे. संघ फीलखाना के उपाध्यक्ष रायचंद छाजेड़, ट्रस्टी हस्तीमल हुंडिया, कांतिलाल संकलेचा एवं विक्रमसिंह ढड्ढा के साथ अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद के प्रदेशाध्यक्ष रमेशकुमार संकलेचा एवं महामंत्री प्रशांतकुमार श्रीश्रीमाल, केएमपी की अध्यक्षा श्रीमती अनिता श्रीश्रीमाल एवं मंत्री श्रीमती श्वेता संकलेचा सहित अन्य गणमान्य के साथ उपस्थित थे।

कार्यक्रम के आयोजक श्री खरतरगच्छ जैन श्री संघ फीलखाना, अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद, हैदराबाद शाखा, अ. भा. खरतरगच्छ महिला परिषद, अ. भा. खरतरगच्छ बाल परिषद एवं ज्ञान वाटिका मंडल थे। श्री जिनेश्वर मंडल, श्री जिनदत्तसूरि जैन सेवा मंडल, श्री वीर मंडल, श्री अरिहंत आरती मंडल, श्री महावीर संगीत महिला मंडल, श्री ऋषभ बालिका मंडल ने अपनी सेवा देकर अमूल्य योगदान दिया।

बेंगलुरु 23 फरवरी। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म. की पुण्यतिथि निमित्त आचार्य श्री जगतचन्द्रसूरिजी महाराज की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीवर्याओं की निश्रा में श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुडी बेंगलुरु के तत्वावधान में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं श्री जिनदत्त कुशलसूरि जैन सेवा मंडल एवं संगीत मंडल बसवनगुडी बेंगलुरु द्वारा दिनांक 23/02/20 को प्रसादी वितरण का कार्यक्रम श्री विमलनाथ जिन मन्दिर दादावाड़ी के बाहर आयोजित किया गया। जिसमें करीब 1200 लोगों को भोजन कराया गया। प्रसादी वितरण कार्यक्रम में दादावाड़ी ट्रस्ट, खरतरगच्छ संघ श्रद्धापूर्वक में साथ में युवा परिषद् और सेवा मंडल के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

(शेष पृष्ठ 23 का)

गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि क्षेत्रों से अनेक भाग्यवानों का शुभ आगमन हुआ।

प्रतिष्ठा समारोह के पश्चात लुंकड परिवार ने देव-गुरु की असीम अनुग्रह को ही सर्वोपरि मानते हुए अपने द्वारा किए सुकृत की शुभ अनुमोदना की एवं निश्रादाता गुरु भगवंतों का गुरुपूजन एवं कामली अर्पण कर हार्दिक आभार व्यक्त किया। परिवार के सौभाग्य में और बढ़ोतरी हुई जब खेतासर जिनालय में प्रतिष्ठित होने वाले श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी, अरिहंत अदिता जोधपुर में विराजमान होने वाले मुनिसुव्रतस्वामीजी आदि बिंब, हाला संघ बाड़मेर में बिराजित होने वाले गौडी पार्श्वनाथ परमात्मा की अंजनशलाका का लाभ इन्हें मिला।

बरोठा प्रतिष्ठा महोत्सव

बरोठा 25 फरवरी। पू. व्याख्यान वाचस्पति श्री जयानंद मुनिजी म.सा. के सुशिष्य गणाधीश पंन्यास प्रवर श्री विनयकुशलमुनि गणिवर्य जी म.सा. आदि ठाणा-2 की पावन निश्रा में बरोठा नगर में श्री विमलनाथ भगवान, श्री गणधर गौतमस्वामी, श्री दादा गुरुदेव आदि का भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित होगा। महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 2-मार्च को अठारह अभिषेक एवं जन्मकल्याणक विधान का आयोजन, 3-मार्च को प्रतिष्ठा का भव्य वरघोड़ा एवं 4-मार्च को प्रातः शुभ मुहूर्त में परमात्मा की भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न होगा। विधि-मार्गदर्शन शासनरत्न मनोजकुमारजी बाबुमल जी हरण के द्वारा होगा।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव में विशिष्ठ लाभ श्री कस्तुरचंदजी सुजानमलजी गुलेच्छा की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में छोटाबाई कस्तुरचंदजी गुलेच्छा परिवार पुत्रः शांतिलाल-मंजुबाई, पौत्रः विकास-शीतल, रूपेश-पिंकी प्रपौत्र-प्रपौत्रीः संयम, संवेग, विरती, रिषिका चेन्नई-फलोदी-नागपुर द्वारा लिया गया है।

कैवल्य धाम में दीक्षा संपन्न

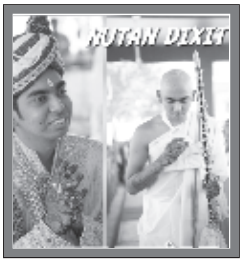

कैवल्यधाम तीर्थ 12 फरवरी। तीर्थ की पावन धरा पर पू. मुनिश्री महेन्द्रसागरजी म. सा. एवं पू. मुनिश्री मनीषसागरजी म. सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में दि. 12 फरवरी 2020 को दीक्षा महोत्सव संपन्न हुआ।

गढसिवाणा-सूरत निवासी मुमुक्षु दर्शन संजयकुमारजी बागरेचा को पू. मुनिश्री शासनरत्नसागरजी म. सा. इस प्रकार नामकरण किया गया।

इस अवसर पर जिनभक्ति महोत्सव के अंतर्गत वर्षीदान वरघोडा आदि समारोह आयोजित किए गए।

अनेक श्रद्धालुओं ने उपस्थित रहकर संयम भावों की अनुमोदना की।

पूज्यश्री का संभावित विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. चौहटन में भागवती दीक्षा संपन्न करवाकर चितलवाना की ओर विहार किया है। चितलवाना में जीर्णोद्धार कृत श्री शांतिनाथ परमात्मा के मंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य गच्छाधिपतिश्री एवं पूज्य आचार्य श्री रत्नाकरसूरिजी म. की पावन निश्रा में ता. 11 मार्च 2020 को संपन्न होगी। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री 16 मार्च 2020 तक जहाज मंदिर मांडवला पधारेंगे। जहाँ सप्ताह भर की स्थिरता के पश्चात् गदग की ओर विहार करेंगे।

संपर्क सूत्र

पूज्य गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

द्वारा- श्री बाबुलालजी लूणिया, श्री महावीर ट्रेडिंग कं.,

5.श्रेयस एस्टेट, सोनारिया ब्लॉक के सामने, जनरल हॉस्पीटल रोड, बापुनगर, अहमदाबाद-380021 (गुजरात)

मुकेश प्रजापत- 7987151421

अरिहंत अदिता में जिनालय की चल प्रतिष्ठा संपन्न

जोधपुर 14 फरवरी। पाल-गंगाना रोड पर अरिहंत अदिता टाउनशिप में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी जिनालय की चल प्रतिष्ठा पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म., मेहुलप्रभसागरजी म. की निश्रा में भव्य वातावरण में संपन्न हुई। जिनालय का स्वद्रव्य से निर्माण कराने का लाभ साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. की प्रेरणा से श्री द्वारकादास भगवानदासजी डोसी एवं श्री भंवरलाल विरदीचंदजी छाजेड़ परिवार ने लिया।

प्रतिष्ठा के निमित्त मुनि भगवंतों का प्रवेश दिनांक 12 फरवरी को हुआ। दिनांक 13 फरवरी को कुंभ स्थापना, दीपक स्थापना आदि पूजनों से जिनालय परिसर को नाना सुगंधित द्रव्य एवं सुगंधों से वासित किया गया। दिनांक 14 फरवरी को प्रातः मूलनायक परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी आदि प्रतिमाजी का जिनालय में प्रवेश एवं 18 अभिषेक महाविधान किया गया। प्रातःकालीन शुभ मुहूर्त में चल प्रतिष्ठा पूज्य मुनि भगवंतों के ओं पुण्याहं पुण्याहं प्रियंतां प्रियंतां का उच्च स्वर से उच्चरित करते हुए वासक्षेप के द्वारा करते ही श्री द्वारकादास भगवानदासजी डोसी एवं श्री भंवरलाल विरदीचंदजी छाजेड़ परिवार पुलकित होकर नृत्य करने लगे।

सपरिकर मूलनायक परमात्मा के साथ गंभारे में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी, श्री वासुपूज्यजी, रंगमंडप में गौतम स्वामी, दादा गुरुदेव जिनकुशलसूरिजी, नाकोडा भेरुजी, पद्मावती देवी की प्रतिमा विराजित की गयी।

प्रतिष्ठा के पश्चात आयोजित धर्मसभा में आर्य मेहुलप्रभसागरजी में परमात्मा भक्ति को सरल मार्ग बताते हुए कहा कि प्रतिदिन की भागदौड़ भरे जीवन में शांति-समाधि की प्राप्ति परमात्मा भक्ति से सहज संभव है। प्रतिदिन परमात्मा दर्शन एवं पूजन की प्रेरणा देते हुए जीवन को धर्म के लिए जीने की प्रेरणा दी।

टाउनशिप में निवास करने वाले शताधिक जैन भाइयों सहित सभी के लिए यह जिनालय वरदान स्वरूप बन गया है। प्रतिदिन सेवा, पूजा, दर्शन से सभी को उन्नति और शांति की प्राप्ति हो रही है।

-पीयूष डोसी

जैन ट्रस्ट जैसलमेर के अध्यक्ष बने भंसाली

जैसलमेर 29 फरवरी। जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर ट्रस्ट मंडल के चुनाव नाकोड़ा भवन में संपन्न हुए। ट्रस्ट मंडल द्वारा सर्वसम्मति से श्री महेंद्रसिंह भंसाली को अध्यक्ष चुना गया। जैन ट्रस्ट के पदाधिकारियों के चुनाव में उपाध्यक्ष पद पर किशनचंद बोहरा, प्रबंधक ट्रस्टी व मंत्री पद पर डॉ. पदमचंद दासोत, कोषाध्यक्ष मनोज राखेचा, सहमंत्री आनंद राखेचा व प्रचार मंत्री विमल मेहता को नियुक्त किया गया। महेंद्र राखेचा को मनोनीत ट्रस्टी के रूप में ट्रस्ट मंडल में लिया गया।

गौरतलब है कि पिछले 42 वर्षों से ट्रस्ट के ट्रस्टी महेन्द्रसिंह भंसाली को चौथी बार ट्रस्ट का निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। भंसाली पेशे से सी.ए. है। विश्व प्रसिद्ध लोद्रवपुर जैन तीर्थ का निर्माण इनके के पूर्वजों द्वारा कराया गया था। ट्रस्ट के विकास के लिए समर्पित भंसाली के आने से हिंदुस्तान के जैन समाज में हर्ष की लहर छा गई। जैन ट्रस्ट जैसलमेर के सदस्य भारतवर्ष में हजारों की संख्या में निवास करते हैं उन्हीं द्वारा चुने गए ट्रस्टियों ने भंसाली व अन्य पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से चुनाव किया।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ।

श्री संभवनाथ कुशल प्रार्थना जैन मंदिर का शिलान्यास सम्पन्न

हैदराबद 15 फरवरी। बरतकपुरा स्थित गोगा सदन परिसर में श्री संभवनाथ कुशल प्रार्थना जैन मंदिर का शिलान्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूज्य आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसागरसूरीश्वरजी म., मुनि श्री अभिनंदनचन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा, छत्तीसगढ रत्नशिरोमणि मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्या श्री तरुणप्रभाश्रीजी म., मधुस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा, साध्वी लक्ष्यलीनाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में श्री संभवनाथ भगवान के जैन मंदिर का शिलान्यास सविधि सम्पन्न हुआ।

फलोदी निवासी अखेराज पूनमचन्द महेन्द्रकुमार कमलचंद झाबक परिवार द्वारा निर्माणाधीन श्री संभवनाथ भगवान के मंदिर के लिए शुभ मुहूर्त मुख्य कूर्म शिला के साथ सभी शिलाओं का भगवान संभवनाथ के जयकारों एवं मंगल गीतों के बीच शिलान्यास किया गया। कार्यक्रम के पश्चात् स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया।

–लोकेश झाबक

लोहावट में समारोह आयोजित

लोहावट 07 फरवरी। श्री गौड़ी पारसनाथ भगवान की छत्रछाया में दादावाड़ी के पवित्र प्रांगण में पूज्या महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. सा. की सुशिष्या श्री संघमित्राश्रीजी म.सा. की दीक्षा दिवस पर आयोजित पंच दिवसीय महोत्सव उल्लासमय वातावरण में स्थानीय एवं प्रवासी लोहावट वासियों की भक्ति भावना पूर्ण उपस्थिति में सानंद संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के अंतर्गत दो महत्वपूर्ण कार्य पू. साध्वी संघमित्राश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से निश्चित किए गए।

1. स्व. पन्नालालजी पारख की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र वसंतजी राजेशजी सुनीलजी पारख परिवार चेन्नई, निवासी लोहावट ने दादावाड़ी के सामने स्वयं के भूखंड में स्वयं द्वारा नए कमरे सर्व सुविधायुक्त बनवा कर श्री संघ को समर्पित करने की घोषणा की। उसी भूमि पर तुरंत ही पूर्ण विधि-विधान के साथ विधिकारक के द्वारा भूमि पूजन का कार्यक्रम संपन्न किया गया। लाभार्थी परिवार ने श्रीसंघ को शीघ्र ही निर्माण पूर्ण करवाने की संघ को विनंती की।

लोहावट में श्री गौड़ी पारसनाथजी जिनालय की 150वीं ध्वजारोहण का कार्यक्रम जो कि 2025 में आ रहा है उस साल में इस कार्यक्रम को बड़े धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया। साथ ही साध्वी संघमित्राश्रीजी म. सा. को सन् 2024 के चतुर्मास की विनंती लोहावट श्री संघ एवं लोहावट प्रवासी जैन संघ की उपस्थिति में की गई।

2. दादावाड़ी के प्रांगण में दादा गुरुदेव की असीम कृपा से उपाश्रय निर्माण की घोषणा की गई। लाभार्थी परिवार श्रीमान् मदनलालजी अनिलकुमारजी चोपड़ा एवं गुलाबचंदजी रमेशकुमारजी चोपड़ा चेन्नई निवासी की श्रीसंघ ने अनुमोदना कर साधुवाद दिया।

ध्यान का मूल गुरु की मूर्ति है...
मंत्र का मूल गुरु के वचन है...
मोक्ष का मूल गुरु की कृपा है...

खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य भगवन्त

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा

के अवतरण दिवस

(61 वे वर्ष में प्रवेश) पर

श्री जिनकुशल सामायिक मंडल, नंदुरबार

की ओर से वंदनाएँ... ढेर सारी शुभकामनाएँ...

श्री जिनकुशल सामायिक मंडल, नंदुरबार

नंदुरबार में श्री जिनकुशल सामायिक मंडल की स्थापना का एक वर्ष

खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी महत्तरापद विभूषिता पूजनीया श्री चंपाश्रीजी म. सा. एवं पूज्या जितेन्द्रश्रीजी म. सा. की सुशिष्या धवल यशस्वी साध्वीवर्या विमलप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की प्रेरणा से खान्देश की धन्यधरा पर नंदुरबार नगर में सामायिक मंडल का गठन किया गया। मिगसर वदि तीज, दि. २५/११/१८ श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म. सा. के जन्म दिवस पर इसका नाम 'श्री जिनकुशल सामायिक मंडल' रखा गया। सामायिक मंडल में ५५ सदस्य है। सभी उम्र के सदस्य है। विशेष करके श्रावकों का प्रति रविवार दोपहर ३ से ४ बजे सामूहिक सामायिक करके ज्ञान में वृद्धि कर रहे है। स्वाध्याय कर रहे है। सामायिक में नित्य २४ तीर्थंकर के नाम स्मरण करते है। हे शारदे माँ... की प्रार्थना बोलने के प्रश्चात स्तुति बोली जाती है। सामायिक में अपनी आत्मा को परमात्मा की ओर जोड़ने का प्रयास करते है।

हमें बहुत गर्व होता है कि जिनकुशल सामायिक मंडल के सदस्य, नंदुरबार संघ के लाडले श्री विजयकुमार (विक्कीभाई) गिरधारीलालजी कोचर ने संयम के मार्ग पर चलने का निर्णय लिया। दि. १०/०५/१९ को नंदुरबार नगर में दीक्षा अंगीकार कर वीर की राह पर चल पड़े। नूतन नाम पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. सा. के नाम से जाने जाते है। आपश्री की निश्रा में सामायिक करने का विशेष अनुभव रहा।

सामायिक मंडल को एक वर्ष पूर्ण होने पर श्री जिनकुशल सामायिक मंडल के प्रणेता पूज्या धवल यशस्वी

जन्म शताब्दी पर शत शत नमनः

पूज्यपिताश्री कस्तुरचंदजी सुजानमलजी गुलेच्छा

1920-2020

पूज्यपिताश्री द्वारा अपने अल्प आयु में किए गए सत्कार्यों के अनुमोदनार्थ,
प. पू. प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. के शुभ आशीर्वाद से
परिवार द्वारा बरोठा ग्राम राजस्थान (मंदसौर के समीप)
निर्मित श्री विमलनाथ भगवान, श्री गणधर गौतमस्वामी, श्रीदादा गुरुदेव जिनालय की
अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

पंचाह्निका महोत्सव

दि. 1.03.2020 से 5.3.2020

पावन निश्राः

परम पूज्य गणाधीश विनय कुशलमुनिजी म.सा. आदि ठाणा
परम पूज्य साध्वी विरलप्रभा श्रीजी आदि ठाणा

विधि विधानः — श्री मनोजजी बाबूमलजी हरण

श्रद्धावंत

छोटाबाई कस्तुरचंदजी गुलेच्छा परिवार

पुत्रः शांतिलाल-मंजुबाई, पौत्रः विकास-शीतल, रूपेश-पिंकी
प्रपौत्र-प्रपौत्रीः संयम, संवेग, विरती, रिषिका

चेन्नई-फलोदी-नागपुरः- 9840133441

साध्वीवर्या विमलप्रभाश्रीजी म. सा. की निश्रा में मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुवर की आज्ञा से एवं मंडल के सभी सदस्य की सहमति से अध्यक्ष- श्रीमान केवलचंदजी मांगीलालजी बाफना, उपाध्यक्ष- अजय प्रेमचंदजी डागा एवं कोषाध्यक्ष- कल्पेशभाई पुखराजजी तातेड को चुना गया। सामायिक में सब से ज्यादा हाजरी होने पर पारितोषिक दिया जाता है। गुरु भगवंतों के दीक्षा दिन पर अष्ट प्रकारी पूजा/स्नात्र पूजा/अनुकम्पा दान सामूहिक में मंडल द्वारा आयोजन किया जाता है।

सामायिक मंडल को एक वर्ष पूर्ण होने पर अनाथ बच्चे, मतिमंद बुद्धि के बच्चों को श्री जिनकुशल सामायिक मंडल के सदस्यों के द्वारा खाना खिलाया गया, जिसका पूरा लाभ श्रीमति बबलीदेवी बस्तीमलजी बाफना परिवार नंदुरबार निवासी ने लिया। जो भी गुरु भगवंत नंदुरबार में होते है उन्हीं की निश्रा में मंडल सामायिक करके ज्ञान अर्जित करता है। अन्यथा अनिल भाई गुरुजी अपना अमूल्य समय निकाल कर प्रति रविवार पढाते है।

गर्व होता है सब को बताते हुए कि मंडल के सभी सदस्यों ने गुरुवंदन विधि सिख ली है। जिन्हें नवकार मंत्र के अलावा कोई भी सूत्र नहीं आता था अब वो आगे बढ़ रहे है। म. सा. ने ज्ञान वाटिका का कोर्स दिया है, जिसमें गुरु वंदन विधि अर्थ के साथ, सामायिक लेने की और पारने की विधि, जिनमंदिर दर्शन विधि आदि का कोर्स चल रहा है, और प्रतिक्रमण सूत्र, जयतिहुअण स्तोत्र आदि सीखना जारी है।

तृतीय दादा गुरुदेव कलिकाल कल्पतरु श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म. सा. की ६८७वीं पुण्यतिथि के निमित्त दादा गुरुदेव का अभिषेक, दादा गुरुदेव की महाआरती, भक्ति एवं गरीब बच्चों को कपडे नंदुरबार संघ के सदस्य से लेकर मंडल द्वारा वितरण किए गए। आगे भी यह कार्य निरंतर समय-समय पर चालू रहेगा।

-श्री जिनकुशल सामायिक मंडल, नंदुरबार

जहाज मन्दिर में वर्षगांठ मनाई

जहाज मंदिर 8 फरवरी। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक जहाज मंदिर प्रतिष्ठा की 21वीं वर्षगांठ अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ 8 फरवरी 2020 माघ सुदि 14 को मनाई गई। कायमी ध्वजा के लाभार्थी श्री पारसमलजी अंकितकुमारजी छाजेड परिवार की ओर से श्री शांतिनाथ परमात्मा के मुख्य शिखर पर की मुख्य ध्वजा चढाई गई। इसी प्रकार दादावाडी, गुरुमंदिर, मणिधारी मंदिर, सर्वगच्छ मंदिर आदि की ध्वजाऐं चढाई गई। इस पावन अवसर पर अनेक यात्रिकों का आवागमन रहा।

हार्दिक श्रद्धांजलि

साध्वीवर्या संयमपूर्णाश्रीजी म.सा.

बीकानेर 13 फरवरी। पूज्या प्रवर्तिनी श्री चंद्रप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वी श्री संयमपूर्णाश्रीजी म. सा. का बीकानेर में कालधर्म हो गया। उनकी अन्तिम यात्रा दिनांक 14-02-2020 को श्री सुगनजी महाराज के उपासरा से प्रारम्भ हुई। आप कुछ समय से बीकानेर (सुगनजी उपासरे) में ही स्वास्थ्य लाभ ले रहे थे।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से वंदना सह हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री दीपचंद जैन

नागेश्वर तीर्थ पेढ़ी के संस्थापक एवं राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित भामाशाह सेठ श्री दीपचंदजी सा देवलोकगमन हो गया। आपने नागेश्वर तीर्थ की सेवा में जिंदगी समर्पित कर जीवन को सफल बनाया।

दिवंगत को जहाज मंदिर परिवार की तरफ से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

कल्याणक भूमि मिथिला तीर्थ की प्रतिष्ठा संपन्न

मिथिला 1 फरवरी। 19वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथजी एवं 21वें तीर्थंकर श्री नमिनाथजी के चार-चार कल्याणकों की पावन भूमि श्री मिथिलाजी तीर्थ का करीब 150 वर्ष पूर्व काल के प्रतिकूल प्रवाह से विच्छेद हो गया था।

तीर्थ की पुनर्स्थापना का संपूर्ण लाभ श्रेष्ठिवर्य श्री हरखचंद नाहटा परिवार द्वारा लिया गया। इससे पूर्व श्री भद्दिलपुर तीर्थ (श्री शीतलनाथ भगवान के चार कल्याणक) की पुनर्स्थापना प्रतिष्ठा का लाभ भी इसी परिवार ने लिया। प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य आचार्य श्री विनयसागरसूरीश्वरजी म. आदि ठाणा तथा पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरीश्वरजी म. आदि ठाणा की निश्रा में एवं पू. साध्वी श्री वैराग्यनिधिश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में हुआ। वीरायतन से पूज्य आचार्या श्री चंदनाजी ने अपनी दो शिष्याओं को इस समारोह हेतु भेजा।

28 जनवरी से प्रारम्भ पंचान्हिका महोत्सव 1 फरवरी को प्रतिष्ठा के साथ धूमधाम एवं आनन्द उत्सव के साथ संपन्न हुआ।

इसके उपरांत तीर्थ स्वप्नद्रष्टा श्री हरखचंदजी नाहटा की प्रतिमा का बिहार के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री प्रमोद कुमारजी ने श्री सुनीलजी सिंघी, सदस्य राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, भारत सरकार की उपस्थिति में अनावरण किया। इस अवसर पर माननीय मंत्री श्री प्रमोद कुमारजी ने सीतामढ़ी में इस जैन तीर्थ की स्थापना पर हर्ष व्यक्त किया।

तत्पश्चात् धर्मसभा हुयी जिसमें इस ऐतिहासिक प्रतिष्ठा प्रसंग पर डाक विभाग द्वारा विशेष आवरण व विरूपण का लोकार्पण किया गया।

अमरसागर तीर्थ का वार्षिक ध्वजारोहण महोत्सव

जैसलमेर 5 फरवरी 2020। संघवी सेठ प्रतापचन्द हिम्मतरामजी पटवा बाफना परिवार द्वारा शिल्पकला वैभव से परिपूर्ण भगवान आदिनाथ जिनालय का वार्षिक ध्वजाराहण महोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

मूलनायक आदिनाथ भगवान, पुण्डरीक स्वामी व दादा गुरुदेव की ध्वजा का थाल लेकर परिक्रमा की। सतरभेदी पूजन के साथ नाचते गाते हुए ओं पुण्याहं... प्रियन्तां... की गूंज के बीच ध्वजा चढाई। इस अवसर पर जोधपुर निवासी मांगीलाल एवं राज व्यास म्युजिकल पार्टी व महिला मण्डल की हेमलता बापना ने संगीत की मधुर लहरियां बिखेर कर वातावरण को धर्ममय बनाया।

इस अवसर पर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष शेरसिंह जैन, सहमंत्री नेमीचन्द जैन, ट्रस्टी मनोज राखेचा, अर्जुन भंसाली, सुरेन्द्रकुमार बापना, ओमप्रकाश राखेचा, गजेन्द्र चौरडिया, पवन कोठारी, व्यवस्थापक विमल जैन, सह व्यवस्थापक जितेन्द्र व्यास आदि उपस्थित थे।

-महेन्द्रभाई बापना

बेंगलुरु में होगा खरतरगच्छाधिपतीश्री का आगामी चातुर्मास

खेतासर 16 फरवरी। पूज्य खरतरगच्छाधिपती, अवन्ती तीर्थोद्धारक आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा एवं पूज्या माताजी महाराज साध्वीवर्या रतनमालाश्रीजी म. एवं पूज्य बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युतप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का सन् 2020 का चातुर्मास श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुडी के तत्वावधान में बेंगलुरु महानगर में घोषित हुआ है।

खेतासर में भव्य जिनमन्दिर दादावाड़ी की प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात आचार्य भगवंत ने दादावाड़ी ट्रस्ट की भावनाओं को देखकर बेंगलुरु महानगर में चातुर्मास करने की उदघोषणा की। आचार्य भगवंत को चातुर्मास की विनती करने हेतु एक प्रतिनिधिमंडल खेतासर पहुंचा जिसमें संघ के वरिष्ठ श्रावक संघवी श्री तेजराज गुलेच्छा, पूर्व अध्यक्ष महेन्द्रकुमार रांका, उपाध्यक्ष बाबुलाल भंसाली, महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा, कार्यकारिणी सदस्यों में पुखराज कवाड, मेवाराम मालू, बाबूलाल मेहता, उम्मेदमल बाफना एवं विनोदकुमार बोथरा उपस्थित थे, चातुर्मास की घोषणा होते ही समस्त खरतरगच्छ संघ के साथ ही सम्पूर्ण जैन समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई।

अवंति तीर्थोद्धारकश्री का चातुर्मास प्रवेश 28 जून को

बाडमेर 26 फरवरी। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी महाराज साहब आदि ठाणा एवं पूज्य साध्वीजी श्री रतनमालाश्रीजी म. एवं पूज्य साध्वीजी श्री डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का ईस्वी वर्ष 2020 का बेंगलुरु में चातुर्मास प्रवेश दिनांक 28 जून 2020 रविवार को श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में बसवनगुडी विमलनाथ जैन मन्दिर दादावाड़ी में होना निश्चित हुआ है।

बसवनगुडी बेंगलुरु से आचार्यश्री के दर्शन वन्दन हेतु आए एक प्रतिनिधि मंडल को चातुर्मास प्रवेश का मुहूर्त बाड़मेर नगर में आयोजित श्री गौडी पार्श्वनाथ भगवान प्रतिष्ठा महोत्सव एवं बाड़मेर निवासी मुमुक्षु पूजा संकलेचा की भागवती दीक्षा के दौरान प्रदान किया। आचार्य भगवंत का बेंगलुरु चातुर्मास हेतु विहार 20 मार्च से जहाज मंदिर मांडवला से प्रारंभ होगा।

प्रतिनिधि मंडल में वरिष्ठ श्रावक संघवी श्री तेजराज गुलेच्छा, महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा सहित कार्यकारिणी सदस्यों से अरविंद कोठारी, पुखराज कवाड, गजेन्द्र संकलेचा, गौतम चौपड़ा, नन्दू भाई पारख, मेवाराम मालू, अशोक चौपड़ा, सज्जनसिंह खटोड़ तथा केयुप बेंगलुरु शाखा से ललित डाकलिया, पंकज बाफना, शशी चौपड़ा, नीलेश मेहता, हेमंत गुलेच्छा, अरविंद चौपड़ा, कल्पेश लुंकड, विनोद बाफना, राजाबाबू पारख आदि सदस्य उपस्थित थे।

–कुशलराज गुलेच्छा

केयुप बाडमेर द्वारा अभिनव आयोजन की भूमिका प्रारंभ

बाडमेर 27 फरवरी। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से बाड़मेर में बनेगा अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद का मुख्य कार्यालय। जिसके लिए एवं ज्ञान वाटिका हेतु भी भूमि क्रय की जा चुकी है।

उक्त घोषणा श्री जिनकांतिसागरसूरि आराधना भवन बाडमेर में अवंति तीर्थोद्धारक पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने की।

साधर्मिक भक्ति हेतु कुशल वाटिका परिसर के पास में बनेंगे 24 फ्लेट। संस्थाओं और श्रावकों की ओर से आर्थिक स्थिति से कमजोर लोगों हेतु बनेंगे। साथ ही आने वाली पीढी में संस्कारों के बीज बोने के लिए ज्ञान वाटिका का निर्माण एवं धर्माराधना के 13 माह का वर्षीतप तपस्या करने वालो की पूर्ण व्यवस्था केयुप शाखा बाड़मेर करेगा।

इस अवसर पर खरतरगच्छाधिपति ने कहा कि कई जन्मों के पुण्य कर्मों के बाद दान करने का भाव आता है। आचार्यश्री ने श्रावकों और संस्थाओं को इस पुण्य कार्य के लिए आशीर्वाद प्रदान करते हुए निरन्तर प्रगति के पथ पर आरूढ होने की प्रार्थना प्रभु से की।

कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल द्वारा विशाल भूखण्ड दिया गया है उस पर भवन निर्माण का कार्य जल्द ही संस्था द्वारा किया जाएगा। घरों के निर्माण के लिए 12 घरों का लाभ श्री राणामल मालचन्द धारीवाल परिवार व एक-एक फ्लेट हस्तीमल खीमराज बोथरा, सम्पतराज खीमराज बोथरा, पुरूषोमदास शंकरलाल सेठिया, मदनलाल सगतमल मालू परिवार द्वारा भेंट किया गया। इस फ्लेट कोलोनी का संचालन कुशल वाटिका ट्रस्ट व केयुप द्वारा किया जायेगा।

इसी घोषणा के तहत बाड़मेर शहर में सामुहिक वर्षीतप की आराधना का कार्य केयुप द्वारा किया जायेगा जो 14 माह तक चलेगा और केयुप द्वारा विद्यापीठ जैन मन्दिर के पास केन्द्रीय कार्यालय व ज्ञान वाटिका का निर्माण किया जायेगा। ज्ञान वाटिका हेतु जूना किराडू में भी भूखण्ड लिया गया है जिन पर निर्माण किया जायेगा।

इस कार्य की सफलता में के-युप राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेशजी लुनिया, के-युप राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमजी सेठिया, के-युप बाड़मेर अध्यक्ष श्री प्रकाशजी पारख एवं के-युप बाडमेर के सभी समर्पित कार्यकर्ता सहभागी रहे।

खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य भगवन्त

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा

के अवतरण दिवस (61 वें वर्ष में प्रवेश) पर

वंदनाएँ... ढेर सारी शुभकामनाएँ...

Vijayraj, Mahendra Kumar, Chandraguptraj
Kumarpal, Ankith, Jinesh, Siddharth,
Dhanpal, Sharesht, Naval, Dhiyansh
Sonit Katariya Parivar
Shubhkamna Vandana

गच्छाधिपतिश्री ने कुशल वाटिका में चल रहे कार्यों का किया अवलोकन

बाडमेर 29 फरवरी। खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के बाड़मेर प्रवास के दौरान कार्यक्रमों की शृंखला में कुशल वाटिका प्रांगण में परम पूज्य खरतरगच्छाधिपतिश्री की पावन निश्रा में सुआदेवी भंवरलाल छाजेड़ आराधना भवन का शुभारंभ लाभार्थी परिवार द्वारा चतुर्विध संघ की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन कार्यक्रम में प्रवर्तिनी महोदया शशिप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी सहित लाभार्थी परिवार के नेमीचन्द छाजेड़, शंकरलाल छाजेड़, भंवरलाल छाजेड़ व कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल व सैकड़ों श्रावक व श्राविकाएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अन्त में लाथार्भी परिवार का बहुमान एवं लाभार्थी परिवार द्वारा संघ पूजन किया गया।

खरतरगच्छाधिपति ने अद्वितीय प्रकल्प कुशल वाटिका में चल रहे निर्माण कार्यों की जानकारी लेते हुए अवलोकन भी किया। उन्होंने 108 फीट ऊंचे भगवान महावीर समोसरण मन्दिर के निर्माण को देखा। साथ ही स्कूल की व्यवस्थाओं को देखते हुए संस्कारों को लेकर अध्यापकों से बात की।

मुमुक्षु अमित बाफना की दीक्षा 20 मई को

बाडमेर 26 फरवरी। खरतरगच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा द्वारा बाड़मेर में मुमुक्षु अमित बाफना (सुपुत्र श्री हीरालालजी सौ. सरस्वती देवी) की भागवती दीक्षा कर्नाटक के गदग शहर में 20 मई 2020 को होगी, यह उद्घोषणा की गई।

परिवार एवं मुमुक्षु अमित बाफना ने हाला संघ द्वारा नवनिर्मित जिनालय के प्रतिष्ठा उत्सव में यह निवेदन प्रस्तुत किया। जिसे पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने सहर्ष स्वीकार करते हुए उक्त घोषणा की।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने कहा कि मुमुक्षु अमित पिछले काफी वर्षों से अध्ययन में रुचि रख रहा है। साथ ही अनेक विहार कर एवं पर्युषण आदि में अनेक श्रीसंघों में आराधना करके जीवन की सही दिशा का निर्धारण किया है।

मुहूर्त्त की घोषणा होते ही सकल संघ में आनंद की लहर छा गई। घोषणा के पश्चात मुमुक्षु ने श्रीसंघ को दीक्षा में पधारने की सकल श्रीसंघ से विनंती की। इस पावन अवसर पर मुमुक्षु का श्री हाला संघ, केयुप बाडमेर, केएमपी बाडमेर द्वारा बहुमान किया गया।

मुमुक्षु अमित बाफना ने बी.ई. व्यवहारिक शिक्षा ग्रहण की है। पू. गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., पूर्णप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से हृदय में संयम के बीज अंकुरित हुए। पूज्यपाद गुरुदेवश्री के सानिध्य में पल्लवित-पुष्पित हुए।

मूलत: गढसिवाना निवासी मुमुक्षु अमित ने अपने गुरुजनों व माता पिता के उपकारों का वर्णन कर सकल श्रीसंघ को दीक्षा महोत्सव में पधारने का निमंत्रण दिया।

साधु साध्वी समाचार

卐 पूज्य नूतन आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. ठाणा3 ब ालोतराप्र तिष्ठाक ेप श्चात् वहारक र जहाज मंदिर पधारे। पूज्य गुरुदेवश्री की समाधि के दर्शन कर पुनः बालोतरा होते हुए ब्रह्मसर पधारे, जहाँ उनकी निश्रा में ब्रह्मसर दादा गुरुदेव के फाल्गुन अमावस्या के मेले का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। वहाँ से उग्र विहार कर पूज्यश्री चौहटन में दीक्षा महोत्सव में पधारे हैं। यहां से विहार कर खिमेल पधारेंगे जहां दि. 11 मार्च को दादावाडी का शिलान्यास समारोह आयोजित होगा।

卐 पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. पालीताना जिनहरि विहार में बिराज रहे हैं।

卐 पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. मोक्षप्रभसागरजी म. मैत्रीप्रभसागरजी म. मननप्रभसागरजी म. आदि ठाणा पालीताना श्री जिनहरि विहार में बिराज रहे हैं।

卐 पूज्य मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा कैवल्यधाम में बिराज रहे हैं। वहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 8 मार्च 2020 को नूतन मुनि श्री शासनरत्नसागरजी म. की बडी दीक्षा संपन्न होगी। पूर्व में यह समारोह धमतरी में होना था। परन्तु पूज्य मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. के स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण स्थान परिवर्तन करना पडा है।

卐 पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. महितप्रभसागरजी म. ठाणा की निश्रा में चौहटन में भागवती दीक्षा की संपन्नता के पश्चात् ता. 11 मार्च 2020 को दोनों नूतन साध्वीजी म. की बडी दीक्षा चौहटन में संपन्न होगी।

卐 पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पू. विरक्तप्रभसागरजी म. पू. श्रेयांसप्रभसागरजी म. पू. मलयप्रभसागरजी म. आदि ठाणा पालीताना जिनहरि विहार में अध्ययन के लक्ष्य से बिराजमान है।

卐 पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना जिनहरि विहार में बिराज रहे हैं। स्वास्थ्य में सुधार है।

卐 पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा बाडमेर से विहार कर चौहटन पधारे हैं। यहाँ उनकी शिष्या पू. साध्वी श्री सहजप्रज्ञाश्रीजी म. की बडी दीक्षाह ेनेक ेप श्चात्ब ाडमेरह ेतेह ुए् दल्लीक ेिअ ेर विहार करेंगे।

卐 पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म., पू. श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना जिनहरि विहार में वर्षीतप के पारणे तक बिराजेंगे।

卐 पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., पू. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा अहमदाबाद से विहार कर बडौदा होते हुए राजपीपला पधार गये हैं। वहाँ से खापर, अक्कलकुआ, नंदुरबार, खेतिया होते हुए हुब्बल्ली की ओर विहार करेंगे।

卐 पूजनीया साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा दल्लीराजहरा बिराज रहे हैं।

卐 पूजनीया साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा चेन्नई में बिराज रहे हैं।

卐 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा बेंगलुरु से विहार कर कृष्णगिरि पधार गये हैं। वहाँ कुछ समय की स्थिरता रहेगी।

卐 पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा छत्तीसगढ़ के रायपुर पधारे। वहाँ उनकी निश्रा में दादावाडी मंदिर के कार्य में प्रथम पाषाण खण्ड स्थापित करने का समारोह आयोजित हुआ।

卐 पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा चौहटन में बिराज रहे हैं।

卐 पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा चौहटन में बिराज रहे हैं। यहाँ से चितलवाना पधारेंगे, बाद में नवपदजी की ओली कराने बाडमेर पधारेंगे।

卐 पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 नाकोडाजी से विहार कर जहाज मंदिर होते हुए जीरावला तीर्थ पहुँचे हैं। वहाँ से अहमदाबाद होते हुए दक्षिण प्रान्त की ओर विहार होगा।

卐 पूजनीया साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म. आदि ठाणा ने पालीताना से तिरुपातूर की ओर विहार किया है।

कल्याणपुरा पार्श्वनाथ जिनालय, बाड़मेर की वर्षगांठ

बाडमेर 28 फरवरी। कल्याणपुरा उपनगरे श्री पार्श्वनाथ जिनमंदिर की वर्षगांठ दि. 28 फरवरी 2020 को हर्षोल्लास व धुमधाम के साथ मनाई गयी। वर्षगांठ के मंगलमय अवसर पर प्रभु भक्तों की साक्षी में प्रातः शुभ वेला में अठारह अभिषेक विधान व श्री सत्तरभेदी पूजन तथा कायमी ध्वजा की विधि विधान के साथ पूजा की गई। कायमी ध्वजा को सिर पर धारण कर परमात्मा की तीन प्रदक्षिणाएँ लगाते हुए विजय मुहूर्त में मन्त्रोच्चार व जयकारों के साथ लाभार्थी परिवार शा. गोरधनमलजी प्रतापमलजी मालाणी रांका सेठिया परिवार धोरीमन्ना द्वारा झूमते-नाचते जिनालय के शिखर पर ध्वजारोहण किया गया।

वर्षगांठ के मंगलमय शुभ दिवस पर सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए परमात्मा की भक्ति की।

-रवि कुमार सेठिया, बाड़मेर

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा संचालित

नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय एवं मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिए

द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा खरतरगच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के वरद हस्त से दिनांक 15 नवम्बर 2017 को हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई है। ऐसे भव्य जिनालय एवं दादाबाड़ी के दर्शनार्थ सपरिवार पधारकर यात्रा का लाभ लेवें।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा संचालित दादाबाड़ी में साधु-साध्वीयों के लिये आराधना हॉल बनाया गया है एवं आधुनिक धर्मशाला में 4 कमरें वातानुकूलित बनाये गये हैं तथा डोरमेट्रीमय 20 पलंग की सुविधा उपलब्ध है। सर्व सुविधायुक्त भोजनशाला चालू है।

यहां पधारने के लिये बीकानेर तथा फलोदी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर-फलोदी-बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

Executive Trustee
Shri padamji Tatia
Mob. 9840842148

मुनीमजी : प्रशान्त शर्मा
श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305, (जि.बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635 पेढ़ी, 9001426345 मुनीमजी

केएमपी हैदराबाद शाखा द्वारा स्वास्थ्य शिविर

हैदराबाद 01 मार्च। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से विशेष स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। आज की आधुनिक जीवन शैली में सही खान-पान और योग द्वारा अपने आपको कैसे फिट रख सके इसके बारे में बताया गया। महिला परिषद की अध्यक्षा अनिता श्रीश्रीमाल और संतोष हुंडिया ने दैनिक जीवन में उपयोगी योग ओर प्राणायाम का अभ्यास कराया। मंत्री श्वेता ने बताया कि एक गृहिणी की स्वास्थ्य जागरूकता से एक पूरा परिवार स्वस्थ रह सकता है। उसके बाद जीवदया का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें कबूतरों को दाना खिलाया गया।

महिला परिषद से देवी छाजेड, दीपिका संकलेचा, कविता संकलेचा, नैना छाजेड़, पिंकी छाजेड़, प्रेमलता, सपना छाजेड़, सारिका, अरुणा, सुमन बाफना, वीणा, रेखा संकलेचा आदि उपस्थित थे।

ब्रह्मसर दादावाडी में मेला

ब्रह्मसर 23 फरवरी। श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट मण्डल के तत्वावधान में जैसलमेर समीपस्थ ब्रह्मसर दादावाडी परिसर में 23 फरवरी को सुबह दादा कुशलगुरु मेला समारोह पूर्वक शुरु हुआ। आचार्य भगवंत श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी महाराज, मुनि कल्पज्ञसागरजी, मुनि नयज्ञसागरजी म. और सकल जैन श्रीसंघ के साथ ब्रह्मसर गांव से एक वरघोडे का आयोजन किया गया। ब्रह्मसर तीर्थ पहुंचने पर पार्श्व महिला मण्डल और दादा जिनकुशलसूरि ट्रस्ट मण्डल ने स्वागत कर अगवानी की।

दादा जिनकुशलसूरिजी म. की 687वीं पुण्यतिथि के अवसर पर मुख्य अतिथि व जिला कलक्टर नमित मेहता ने सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर ब्रह्मसर ट्रस्ट के प्रबंधक मंत्री गेनीराम मालू ने ट्रस्ट का आभार प्रतिवेदन पेश किया। इस अवसर पर मुनिराज कल्पज्ञसागरजी म. ने कहा कि कुशलगुरु की जय या जयकारों का नहीं बल्कि उनके उपदेशों को जीवन में उतारने का विषय है असंभव कार्य को करने वाले कुशलगुरु है। आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी के सानिध्य में नवकार मंत्र की धुन के साथ पंचरंगी झण्डे का ध्वजारोहण कर दो दिवसीय धार्मिक मेले का शुभारंभ किया। दादा जिनकुशलसूरिजी की तस्वीर के आगे अतिथि एवं मुख्य अतिथियों एवं ट्रस्ट मण्डल के पदाधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलित किया।

दोपहर में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद शाखा बाड़मेर की ओर से दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। जिनकुशल भक्ति मंडल ने विमलनाथ भगवान की अंगरचना व दादवाडी पर फूलों की सजावट एवं रंगबिरंगी लाईट की सजावट की गई।

इस अवसर पर नाकोडा तीर्थ के पूर्व अध्यक्ष अमृतलाल जैन, दानमल डूंगरवाल, गेनीराम मालू, पारसमल घीया, जैन ट्रस्ट कोषाध्यक्ष शेरसिंह जैन, नेमीचंद बागचार, मूलचंद कोठारी, प्रचार मंत्री पारसमल गोठी, ओमप्रकाश संखलेचा, बाबूलाल टी. बोथरा, बाबूलाल लूणिया, लखमीचंद गांधी चितलवाना, मनसुख पारख, अशोक धारीवाल मदन मालू, नेमीचंद छाजेड बायतु आदि मौजूद थे। संचालन मोतीलाल मालू व महेन्द्र भाई बापना ने किया।

जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संस्था संरक्षक

श्री मुल्तान जैन श्वे. सभा (श्री मुल्तान मन्दिर), आदर्श नगर, जयपुर
श्री अवन्ति पार्श्व. तीर्थ जैन श्वे.मू.पू. मारवाड़ी समाज ट्रस्ट, उज्जैन
श्री जैन मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट, इचलकरंजी
श्री जैन श्वे. संघ २(महावीर साधना केन्द्र) जवाहर नगर, जयपुर
श्री जैन श्वे. संस्था (वासुपूज्य आराधना भवन), मालवीय नगर, जयपुर
श्री दिल्ली गुजराती श्वे.मू.पू. जैन संघ गुजरात विहार, दिल्ली
श्री जिनकुशलसूरि जैन खरतरगच्छ दादावाड़ी ट्रस्ट, नईदिल्ली
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ, पचपदरा
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ सम्पत्ति ट्रस्ट, भीलवाड़ा
श्री देराऊर पार्श्वनाथ तीर्थ एवं देराऊर दादावाड़ी, जयपुर
श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर
श्री हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति, हस्तिनापुर
श्री जैन श्वे. वासुपूज्यजी म. का मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर
श्री जैन श्वे. चौमुख दादावाड़ी वैशाली नगर, अजमेर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ जाटावास, लोहावट
श्री बडौदा जैन श्वे. खरतरगच्छ, संघ, वडोदरा
श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा, जयपुर
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर
श्री अजितनाथ जैन नवयुवक मंडल, नंदुरबार
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ, सांचोर
श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक श्री संघ, उदयपुर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, अजमेर
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, गाजियाबाद
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, गुरला (भीलवाड़ा)
जैन श्री संघ, सेलम्बा, (नर्मदा, गुजरात)
श्री पार्श्वमणि तीर्थ, पेद्दतुम्बलम्, आदोनी
श्री जैन श्वे. संघ जैन मंदिर, तलोदा
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, केकड़ी
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, ब्यावर
श्री जैन श्री संघ, धोरीमन्ना
श्री उम्मेदपुरा जैन श्री संघ, सिवाना
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, खापर
जैन श्री संघ, वाण्याविहिर
श्री कुशल पत संस्था, खापर
श्री नमिनाथ पत संस्था, खापर
श्री हाला जैन संघ, ब्यावर-फालना
श्री जिन हरि विहार समिति, पालीताणा
श्री हरखचंद नाहटा स्मृति न्यास, नई दिल्ली
श्री जिनदत्तसूरि जैन श्वे. दादावाडी, दोंडाईचा
श्री जैसलमेर लौद्रवपुर जैन श्वे. ट्रस्ट, जैसलमेर
श्री जिन कुशल मंडल (बाड़मेर) इचलकरंजी
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुम्बई
श्री रायॅल काम्पलेक्स श्वे. मूर्तिपूजक संघ, मुंबई
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, भांयदर, मुंबई
श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, दोड्डबल्लापुर (बैंगलोर)
श्री संभवनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, वडपलनी, चैन्नई
श्री वासुपूज्यस्वामी जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट, अरूम्बकम, चैन्नई
श्री कुन्थुनाथ जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ (रजि.) सिंधनूर
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट-जिनदत्तसूरि जैन सेवा मंडल, चेन्नई
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी बाड़मेर ट्रस्ट- मालेगॉव
श्री जैन श्वे. आदीश्वर भगवान मंदिर ट्रस्ट, सोलापुर
श्री जैन श्वे. मू.पू. श्री संघ, बिजयनगर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, जसोल
श्री शीतलनाथ भगवान मन्दिर एवं दादा जिनकुशलसूरि समिति, पादरू
श्री आदिनाथ जिनमंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, हुबली
- जैन श्वेताम्बर श्री संघ, शेरगढ़
- श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, इन्दौर
- श्री जैन मरुधर संघ, हुबली (कर्णाटक)
- श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट, सारंगखेडा
- श्री जिन कुशल सूरि बाडमेर जैन श्री संघ, सूरत
- श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, अग्रहार, मैसूर
- श्री जैन श्वेताम्बर मू.पू. श्री संघ, ऊटी (नीलगिरी तमिलनाडू)
- दादावाड़ी श्री जिनकुशलसूरि जिनचन्द्रसूरि ट्रस्ट, अयनावरम् चैन्नई
- श्री शान्तिनाथ जिनालय ट्रस्ट, चौहटन

केएमपी बालोतरा द्वारा अनुकंपा कार्य

बालोतरा 22 फरवरी। खरतरगच्छ महिला परिषद शाखा बालोतरा द्वारा स्थानीय नाहटा हॉस्पिटल में डॉ. राणुलालजी खत्री व नर्सिंग स्टाफ की उपस्थिति में 150 मरिजों को फल व बिस्किट वितरित किए गए। परिषद की सभी महिलाओं ने मरिजों की कुशलक्षेम पूछ कर जल्दी से स्वस्थ होने की कामना की।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर फल बेचने वाले एक ठेले के आगे खड़ा था। ठेला आमों से भरा हुआ था। जटाशंकर के मन में आया कि मुझे खाना है। पर पैसे नहीं है।

उसने बडी सावधानी से एक आम चुरा लिया। ठेले वाले को पता भी नहीं चला।

वह वहाँ से रवाना हो ही रहा था कि उसके मन में आया- मैं चोरी का आम नहीं खाना चाहता।

उसने योजना बनाई और ठेले वाले से कहा- भैया! यह आम जरा बदल दो!

ठेले वाले ने यह सोचाकर कि इसने खरीदा होगा तो बदलने में कोई समस्या नहीं है, आम बदलकर दूसरा दे दिया।

एक व्यक्ति दूर खड़ा यह सब देख रहा था। जब जटाशंकर आम खाने लगा तो उस व्यक्ति ने कहा- तूं चोरी का आम खा रहा है।

जटाशंकर ने कहा- सवाल ही नहीं!

वह व्यक्ति बोला- तूंने आम चुराया था, मैंने अपनी आंखों से देखा था।

जटाशंकर बोला- वो आम तो मैंने वापिस दे दिया था। और जो मैं खा रहा हूँ, वह उसने अपने हाथ से मुझे दिया था।

वह व्यक्ति इस 'चोरी और सीनाजोरी' पर हैरान हो गया।

तर्कों से अपने मन को समझाया जा सकता है। यह मन की चालबाजी है। पर इससे सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता।

दो विहारधामों का भूमि पूजन

बागुंडी 20 फरवरी। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में बालोतरा से बाडमेर के मध्य दो विहारधामों का भूमि पूजन ता. 20 फरवरी 2020 को किया गया।

बालोतरा से 25 कि.मी. दूर बागुंडी गांव में श्री प्रकाशदान जी चारण द्वारा भेंट प्रदान किये गये भूखण्ड़ का भूमि पूजन किया गया। भूमिपूजन के समय केयुप के राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष पुरषोत्तमजी सेठिया, नाकोड़ा ट्रस्टी गजेंद्रजी संखलेचा और महेंद्रजी चोपड़ा (बायतु सरपंच), भागीरथजी गोलेच्छा, जीतुजी गांधी, मांगीलालजी मालु, केयुप के सदस्य रमेशजी मालु कानासर, केवलचन्दजी छाजेड़, भूरचन्दजी छाजेड़, नरेशजी लुनिया, रमेशजी अगड़ावा, किशनलाल छाजेड़, केवलचंद जी नाहटा, गोतमचंदजी संखलेचा, सुनीलजी बोथरा, भरत संखलेचा, कैलाश बोथरा सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। भूमिदाता परिवार का बहुमान किया गया। इस विहार धाम का निर्माण एवं संचालन केयुप द्वारा किया जायेगा।

इसी प्रकार निंबाणियों की ढाणी गांव में श्री घमंडराम जीवणाराम दीपाराम तेजाराम धर्माराम पुत्र श्री रुपारामजी भाम्भू द्वारा भेंट प्रदान किये गये भूखण्ड़ का भी भूमि पूजन ता. 22 फरवरी 2020 को किया गया। भूमिदाता परिवार का बहुमान किया गया।

अवन्ति तीर्थोद्धारक, संयम प्रणेता, मरुधरमणि, खरतरगच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य प्रवर पूज्य

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

के अवतरण दिवस (61 वें वर्ष में प्रवेश) पर

वंदनाएँ...शुभकामनाएँ

परम गुरुभक्त

संघवी अमृतलाल पुखराजजी कटारिया सिंघवी

मुम्बई-बालोतरा

❖ संरक्षक
श्री नाकोड़ा तीर्थ पूर्णिमा पदयात्रा संघ
भैरव सेवा समिति-बालोतरा/मुंबई

❖ संस्थापक अध्यक्ष
श्री समस्त जैन कटारिया एवं कटारिया संघवी फाउंडेशन-मुंबई

❖ अध्यक्ष श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ, मुंबई

❖ उपाध्यक्ष-श्री आर्य गुरु गुरुकृपा जैन तीर्थ रामजी का गोल, बाड़मेर (राज.)
❖ परामर्शदाता ट्रस्टी - श्री केसरिया कुंथुनाथ 28 अखंड ज्योति मंदिर तीर्थ, जोधपुर
❖ उपाध्यक्ष - श्री बालोतरा प्रगति मण्डल, मुंबई
❖ संस्थापक सदस्य - ऑल इंडिया जैन कटारिया फाउंडेशन

फर्म - महा भैरव मेटल इंडस्ट्रीज, मुंबई

बालोतरा में बी.एन.ग्रुप द्वारा निर्मित
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न

RNI : RAJHIN/2004/12270

Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

बाड़मेर में हाला संघ द्वारा निर्मित जिनालय की प्रतिष्ठा संपन्न

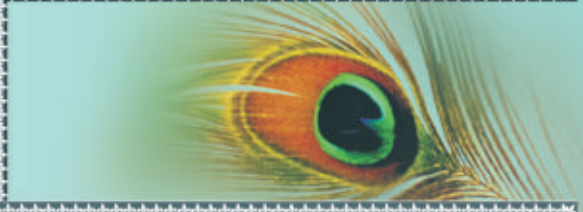

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,

जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)

फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451

e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408